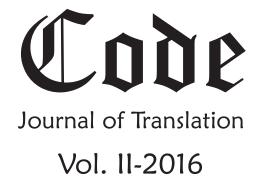


Indraprastha College for Women University of Delhi



Children's Literature Special

Student Editors:

Apoorva Shekher Anamika Dass

Cover Credit: Dhawani Mahajan

Illustrators: Dhawani Mahajan, Arooshi, Kaushikee, Kajal Gupta, Vidhu Prakash

Contents अनुक्रम

3	
Poems कविताएँ	7-18
Ibn Battuta's Shoe (Hindi to English)	9
सयानी बिल्ली (मैथिली से हिन्दी)	11
The Helpless Mother (Hindi to English)	12
That Night, the Tiger Came (Hindi to English)	14
बचपन (हरियाणवी से हिन्दी)	16
The Raindrop (Hindi to English)	17
Oral Narratives किस्से	19-46
The Demoness, Lai Khutsaangbi (Manipuri to English)	20
The Hat Seller and the Monkeys (Sinhala to English)	22
मोती और फूल (उर्दू से हिन्दी)	24
निडर पाड़ा (भोजपुरी से हिन्दी)	27
चतुर बिल्ली (मारवाड़ी से हिन्दी)	31
The Ant Returns the Favour (Bangla to English)	32
बूढ़ी औरत (उड़िया से हिन्दी)	34
The Magical Myna (Kashmiri to English)	37
Never Stay in Bad Company (Punjabi to English)	40
राजा के सिर पर सींग (उर्दू से हिन्दी)	42
Uppuchepala Vepudu (Telugu to English)	44
Stories कहानियाँ	47-60
The Biggest Treasure (German to English)	48
दुष्ट बाघ (बांग्ला से हिन्दी)	50
Tears of the Sky and Sighs of the Earth (Hindi to English)	52
चेरी का पेड़ (अंग्रेज़ी से हिन्दी)	54
Friendship (Hindi to English)	56
टुनटुनी और नाई की कहानी (बांग्ला से हिन्दी)	58
Akbar Birbal-कौवों की गिनती	61-65
Silence in Translation	67-72

Editor's Note

Dear Readers,

The journey from the maiden issue of CODE to the second volume has been a truly exhilarating experience. We have had many events around translation in the past one year since the inception of Translation and Translation Studies Centre. Before coming out with a journal themed translating Children's Literature, a workshop had been organized in October last year under the aegis of Katha-IGNOU initiative on translation which gave us a direction in narrating and translating children's stories.

This issue is a special one as the stories included herein bind the interest of children and adults alike. In the process of editing and translating, I realized that translating children's literature may seem facile but in reality it is a challenging task to think as and for children. The journal covers a wide range of themes in the larger corpus of children's literature and in many different languages. The expanse of the journal has languages from different quarters of the world — Bangla, Bhojpuri, English, German, Haryanvi, Hindi, Kashmiri, Maithili, Manipuri, Marwari, Odia, Punjabi, Sinhala, Telugu and Urdu. The colourful spectrum of the current issue fills me with delight.

A unique feature of this issue is that many stories in this volume have been taken from the oral tradition of storytelling. We all hear stories as children but these stories, which can become a vital part of literature, often go unnoticed, undocumented and unheard. In this issue, we have made an attempt to revive the dying traditions within diverse cultures which are so vividly portrayed in these stories. Some stories are popular folk tales or mythical legends in their original languages. For instance, the story of Lai Khutsaangbi is a Manipuri folk tale about a demoness which is a popular bedtime story told to almost every child in Manipur. The translation of this story has been included in the journal, along with many such stories. In the section on Oral Narratives, we have not published the entire tale in the original language; instead we have chosen an excerpt from the story and published it in the original language which will serve as a sample and give a flavour of the script to the reader. For the entire story, the reader can refer to the translation. In the segment titled 'Stories', some of the original texts have not been published as they are written, published texts which are easily available. We have acknowledged the source of the translated stories wherever we have not published the original texts. Another noteworthy feature of the second volume of CODE is comic strips. In this issue, we have included an Akbar Birbal story in comic-strip form wherein the Hindi dialogues have been translated into Telugu.

It has been two years since I joined the editorial board of CODE and this time is captured forever in my album of unforgettable memories. I wish to express my gratitude to Dr. Babli Moitra Saraf, Principal, Indraprastha College for Women for the immeasurable amount of

support and encouragement she has provided throughout the translation project. The journal would not have taken even a step ahead without the guidance of Dr. Vinita Sinha and Dr. Rekha Sethi. I am thankful to Ms. Ayesha Abrar and Ms. Amita Pandey who helped us in editing the translations, despite their busy schedules. My sincere thanks are due to those who have helped us in writing the scripts of languages other than English and Hindi – Smt. Raj Mohini Dhar and Mr. Triloki Nath Dhar for Kashmiri and Mr. Syed Abrar Ali for Urdu. Thanks are due to the students who have designed the cover page and provided suitable and evocative illustrations to the chosen texts. I thank all the authors and poets whose works have provided a platform for the budding translators of Indraprastha College. My concluding thanks are due to the invisible authors, that is, the parents, grandparents and others whose stories have remained etched in the minds of those who have attempted translations of the oral narratives.

While bidding adieu to the college and the editorial board of CODE, I wish and hope that the journal continues to publish translations of high quality and proves to set a benchmark in the field of translation and translation studies.

Au Revoir!

Apoorva Shekher

English, III year

सम्पादकीय

समय के साथ होते बदलावों को धारण करने वाला मनुष्य ही सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ पाता है। बदलावों का होना और उन्हें धारण करना एक लम्बी प्रक्रिया है। इन बदलावों का प्रभाव हम कई क्षेत्रों में महसूस करते हैं, उसी में से एक है 'साहित्य'। वाचिक साहित्य की विलुप्त होती परम्परा को सहेजने की ज़िम्मेदारी हम सभी की है। इस वाचिक साहित्य में बाल-साहित्य की समृद्ध परम्परा है। दादी-नानी से सुनी कहानियाँ आजीवन हमारे साथ रहती हैं। हमारी पत्रिका 'कोड' का यह अंक वाचिक परम्परा में बाल-साहित्य पर आधारित है।

अनुवाद या रूपांतरण एक ऐसी पिक्रया है जिसमें हमारा पिरचय क्षेत्र व भाषाई विविधता से होता है फिर भी भारत की सांस्कृतिक एकता की इससे बड़ी मिसाल और क्या होगी कि लगभग सभी भाषाओं, सभी बोलियों में थोड़ी हेर-फेर के साथ एक जैसी कहानियाँ मिलती हैं। इस 'पित्रका' में हमने कई भाषाओं को शामिल किया है—मणिपुरी, बांग्ला, मैथिली, भोजपुरी, उर्दू, अंग्रेज़ी, हिन्दी, हिरयाणवी, जर्मन, मारवाड़ी, उड़िया, कश्मीरी, तेलुगु, स्पेनिश, सिंहाला। रचनाओं के चयन का मूल आधार था वाचिक परम्परा में बाल-साहित्य। प्रस्तुत 'पित्रका' में कई ऐसी कहानियाँ हैं जो वाचिक होने के कारण कई भाषाओं में प्रचितत हैं जैसे 'टुनटुनी और नाई की कहानी' तथा 'राजा के सिर पर सींग है'। यह कहानियाँ किसी एक भाषा की धरोहर नहीं अपितु यह नये अन्दाज़ में एक भाषा से दूसरी भाषा तक का सफर तय करती हैं। चयन प्रक्रिया के दौरान हमें कई किस्से भी प्राप्त हुए जिन्हें हमने रोचक और आकर्षक ढंग से आप तक पहुँचाने का प्रयत्न किया है। अकबर और बीरबल के रोचक किस्सों को पित्रका में शामिल करना एक तिहरा प्रयास है। इसमें हमने चित्रों के माध्यम से पहले उसे एक भाषा में अनूदित किया और फिर उस भाषा को दूसरी भाषा में। प्रत्येक अनूदित कहानी के संग विद्यार्थियों द्वारा किया गया उसका रेखांकन तथा मूल कहानी का जायज़ा लेने के लिए स्रोत भाषा में उसका नमूना भी प्रस्तुत किया गया है।

अनुवाद केन्द्र की स्थापना की पहल के लिए मैं प्राचार्या डॉ. बाबली मोइत्रा सर्राफ़ का सादर धन्यवाद करती हूँ। मैं डॉ. अमिता पाण्डेय का आभार प्रकट करती हूँ जिन्होंने पग-पग पर हमारा मार्गदर्शन किया। अनुवाद केन्द्र की मुख्य सलाहकार डॉ. रेखा सेठी और डॉ. विनीता सिन्हा का बहुत-बहुत शुक्रिया जिन्होंने इस बहुभाषी पित्रका की संकल्पना से लेकर उसे रूपाकार देने में हमारा सहयोग किया। बांग्ला कहानियाँ उपलब्ध कराने से लेकर उनके अनुवाद तक की पूरी प्रक्रिया का श्रेय डॉ. आनिंदिता राय साहा को जाता है जिनके सहयोग के बिना इसे पूरा कर पाना कठिन था।

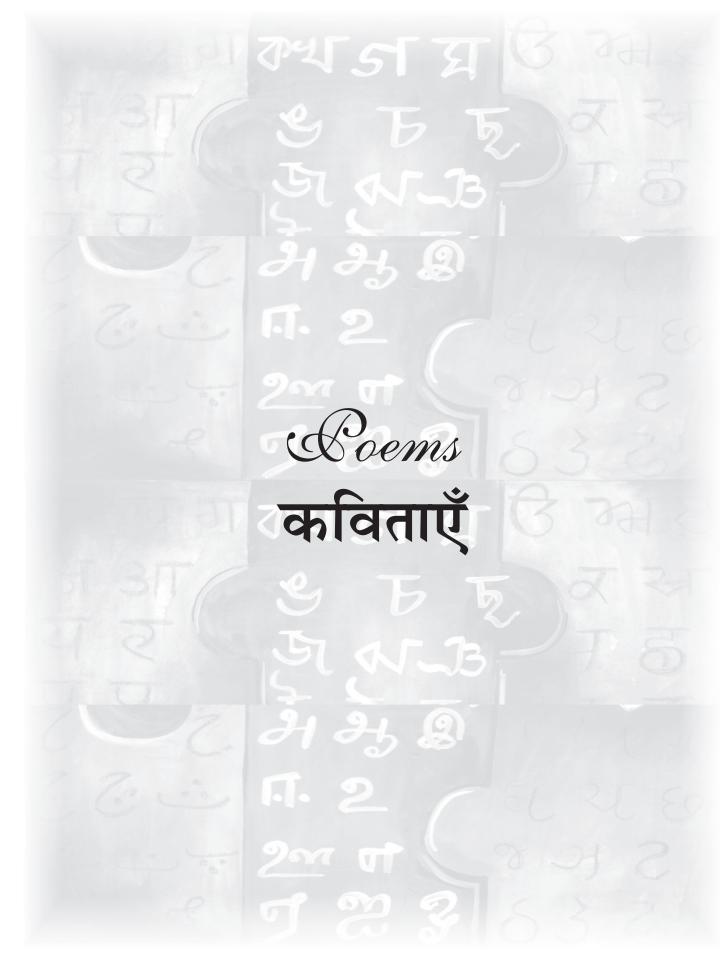
इस 'पित्रका' को पूरा करने में सिर्फ कुछ चयनित विद्यार्थियों का ही नहीं अपितु इनके अतिरिक्त छात्राओं व प्राध्यापिकाओं के परिवार व अन्य परिजनों का भी अप्रत्यक्ष रूप से महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। उन सभी छात्राओं का मैं धन्यवाद करती हूँ जिन्होंने रेखांकन के माध्यम से पित्रका को अति रुचिकर बनाया। पित्रका के मुख-पृष्ठ का पूरा श्रेय ध्विन महाजन को जाता है। सभी के अथक प्रयास और अद्भुत कला से 'पित्रका' एक नये अन्दाज़ में प्रस्तुत हो पाई है।

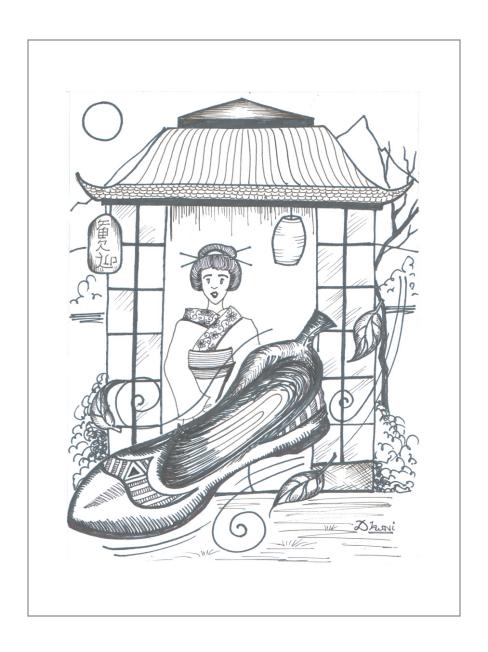
आशा करती हूँ, कि इस 'पत्रिका' को पढ़कर आप इन रोचक कहानियों की भाषायी विविधता से जुड़ पायेंगे। 'पत्रिका' आपके समक्ष है, विचारों और सुझावों का इन्तज़ार रहेगा…।

अनामिका दास

अशा करता हूं, कि इस पा
'पत्रिका' आपके समक्ष है, विचा

6 | **©ode** Journal of Translation





इब्नबतूता का जूता

इब्नबतूता पहन के जूता
निकल पड़े तूफ़ान में
थोड़ी हवा नाक में घुस गई
थोड़ी घुस गई कान में।
कभी नाक को कभी कान को
मलते इब्नबतूता
इसी बीच में निकल पड़ा
उनके पैरों का जूता।
उड़ते-उड़ते जूता उनका
जा पहुँचा जापान में
इब्नबतूता खड़े रह गए
मोची की दुकान में।

- सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

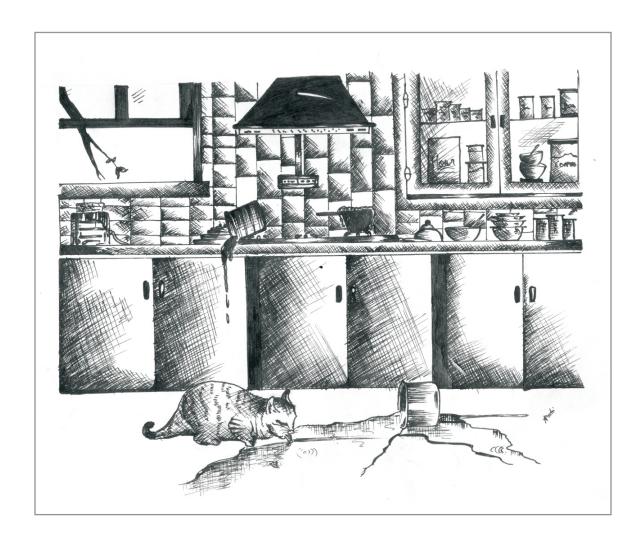
Ibn Battuta's Shoe

When Ibn Battuta put on a shoe, And walked into the storm one day, A little wind in his nose did coo, A bit in his ear found its way.

> His nose he rubbed, He rubbed his ear And the shoe he loved Flew off, oh dear!

Flying high with the howling gale His shoe reached the distant Japan While at the cobbler's he grew pale As jinxed was now his entire plan.

Translated by :
Apoorva Shekher
English, III year



चतुर बिलाड़ी

बड़ बुधियारि, बड़ बुधियारि। भनसा घर घुसिऐलि बिलाड़ी।। झटपट चट केलक जुमि छाल्ही, दूधो गेलि सुरिक, किछु डाढ़ी। छाड़ि पड़ाएल, त्वरित नुकाएल, जाए बिलाएल अन्हराठाढ़ी।। धिया-पुता केर कहबए मौसी, बुलकी नाक न कान कनौसी। अबला बूझि पड़ैत अछि लेकिन बाधक छवि है प्राप्त मरौसी।। कनियों यदि कए लियौ दुलार, नाङ्गरि ठाढ करत स्वीकार। भोजन करइत काल सन्निकट, वैसल जीभ नचौत देखार।। अहिना ई करइछ अभिवादन म्याउँ-म्याउ कहि-कहि अपनासन। एहि में भरल प्रगाढ़ तितिक्षा मान. याचना स्नेहक ज्ञापन॥ बड़ बुधियारि, बड़ बुधियारि

स्रोत भाषा : मैथिली

सयानी बिल्ली

बड़ी सयानी, बड़ी सयानी रसोई में आई, बिल्ली रानी।। झटपट चट कर गई मलाई, सुड़क दूध, कछु डाढ़ी खाई, दिखते ही वह ज़ोर से भागी, अन्हराठाढ़ी² में, गई विलाई³। हल्की-सी मछली की गंध. इसे है देता बहुत आनंद, काँट-कूस का डर न इसको, भींचकर करती आँखें बंद। बच्चों की कहलाए मौसी नाक में नथनी न कान में बाली. फिर भी यह अबला-सी लगती. दिखने में यह बाघ के जैसी। ज़रा भी इसको कर लें प्यार, पुँछ उठाकर करे स्वीकार, भोजन करती बैठकर पास. निकाल जीभ फिर हुई देखार। इसी तरह करती अभिवादन म्याऊँ-म्याऊँ में हो अपनापन इसमें है धीरज प्रगाढ याचना, मान व स्नेह का ज्ञापन। बड़ी सयानी, बड़ी सयानी बिल्ली रानी, बड़ी सयानी

> अनुवाद: **अनामिका दास** हिन्दी, द्वितीय वर्ष

^{1.} डाढ़ी–बरतन का दूध खत्म होने पर उसमें बचा हुआ भाग।

^{2.} अन्हराठाढ़ी-गाँव का नाम, 3. विलाई-खो जाना

एक माँ की बेबसी

न जाने किस अदृश्य पड़ोस से निकल कर आता था वह खेलने हमारे साथ-रतन, जो बोल नहीं सकता था खेलता था हमारे साथ एक टूटे खिलौने की तरह देखने में हम बच्चों की ही तरह था वह भी एक बच्चा। लेकिन हम बच्चों के लिए अजूबा था क्योंकि हमसे भिन्न था। थोडा घबराते भी थे हम उससे क्योंकि समझ नहीं पाते थे उसकी घबराहटों को. न इशारों में कही उसकी बातों को. न उसकी भयभीत आँखों में हर समय दिखती उसके अंदर की छटपटाहटों को। जितनी देर वह रहता पास बैठी उसकी माँ निहारती रहती उसका खेलना। अब जैसे-जैसे कुछ बेहतर समझने लगा हूँ! उनकी भाषा जो बोल नहीं पाते हैं याद आती रतन से अधिक उसकी माँ की आँखों में झलकती उसकी बेबसी।

– राजेश जोशी

The Helpless Mother

From some invisible quarters He would come out To play with us-Ratan, who could not speak Played with us like a broken toy He looked like the rest of us He was a child too. But seemed a thing of wonder Because he was different from us. A bit afraid we were Because we never understood His fears, nor his gestures, Nor the hidden agonies Always visible in his frightened eyes. As long as he stayed His mother who sat close by Would lovingly watch him play. Now that I better understand The language of those who cannot speak, More than Ratan. I remember the helplessness Mirrored in his mother's eyes.

Translated by: **Apoorva Shekher**English, III year

बाघ आया उस रात

"वो इधर से निकला उधर चला गया ऽऽ" वो आँखें फैलाकर बतला रहा था-"हाँ बाबा, बाघ आया उस रात, आप रात को बाहर न निकलो! जाने कब बाघ फिर से आ जाए!" "हाँ, वो ही ी! वो ही जो उस झरने के पास रहता है वहाँ अपन दिन के वक्त गए थे न एक रोज़? बाघ उधर ही तो रहता है बाबा, उसके दो बच्चे हैं बाघिन सारा दिन पहरा देती है बाघ या तो सोता है या बच्चों से खेलता है ..." दूसरा बालक बोला-"बाघ कहीं काम नहीं करता न किसी दफ्तर में न कॉलेज में ऽऽ" छोटू बोला-"स्कूल में भी नहीं ..." पाँच-साला बेटू ने हमें फिर से आगाह किया "अब रात को बाहर होकर बाथरूम न जाना!"

– नागार्जुन

That Night, The Tiger Came

"He emerged from there, And went that way."

Wide-eyed,

He was telling me-

"Yes Baba, that night, the tiger came,

Don't go out at night!

Who knows, if the tiger comes back! "

"Yes, that one! The one

That lives near that spring,

Where we once went

While it was day?

That is where the tiger lives.

Baba, he has two kids,

The tigress keeps guard all day.

The tiger either sleeps

Or plays with the kids..."

The second child said-

"The tiger doesn't work anywhere,

Neither in any office,

Nor in a college."

Chhotu said-

"Not even in the school."

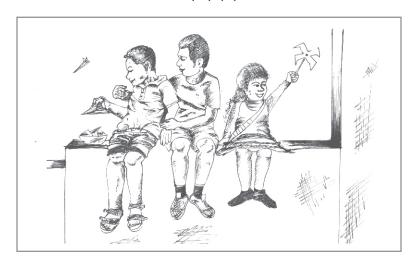
Five-year-old Betu

Warned me again,

"Now, at night, don't go to the bathroom by the outer path!"

Translated by:
Snigdha Supriya
English, III year

बचपन



प्यारे थे बचपन के साथी एक तै बढ़कै एक हिमाती चिजै खणा मैं सारे डाकी धोरै रुपली किसे के नैपाती।

गली म्हं खेले तै पकड्म पकडाई प्लाट लुहक गै तै लुहकम छिपाई छुट्टी के दिन ना कदे भी न्हाये जोहड पै जा के धरघुले बनाये

जोहड पै न्हा कै आया करते बैठक म्ह ताश बजाया करते खेल-खेल म्हं कर लेते लडाई प्यारे दोस्त पै खा लेते पिटाई

ईब ना रहा यो टेम पुराणा दादी माँ का नित लोरी सुनाना सॉवडीया नै थ याद दिलाणा बचपन बैरी नै न मुडकै आणा।

स्रोत भाषा : हरियाणवी

प्यारी-सी बचपन की यारी. एक-दूजे में जान हमारी, खाने में हम सबसे आगे. बिन पैसे भी मौज उड़ाते।

गली में खेले पकड़म-पकड़ाई, खाली घर में लुक्कम-छिपाई, छुट्टी के दिन न कभी नहाएँ, तालाब पर जाकर घर-घुल्ले¹ बनाएँ।

तालाब में सब नहाया करते. बैठक में मौज उडाया करते, खेल-खेल में होती लडाई, प्यारे मित्रों से खा लेते पिटाई।

अब नहीं रहा वह समय पुराना, दादी का रोज़ लोरी सुनाना, साँवरिया का याद दिलाना. बचपन कभी न वापस आना।

> अनुवाद: पिंकी हिन्दी, द्वितीय वर्ष

एक बूँद

ज्यों निकल कर बादलों की गोद से थी अभी एक बूँद कुछ आगे बढी सोचने फिर-फिर यही मन में लगी आह! क्यों घर छोडकर मैं यों बढी?

दैव मेरे भाग्य में है क्या बदा मैं बचूँगी या मिलूँगी धूल में? या जलुँगी गिर अंगारे पर किसी, चू पडुँगी या कमल के फूल में? बह गई उस काल कुछ ऐसी हवा वह समुन्दर ओर आई अनमनी एक सुन्दर सीप का मुँह था खुला वह उसी में जा पड़ी मोती बनी। लोग यों ही हैं झिझकते. सोचते जबिक उनको छोडना पडता है घर किन्तु घर का छोडना अक्सर उन्हें बूँद लों कुछ और ही देता है कर।

- अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

The Raindrop

From the lap of clouds *The raindrop took a step ahead* She started to think over and again Oh! Why did I leave my home behind?

God, what is in store for me, Will I survive or mingle with the dust? Or fall on an ember and burn, Or will I drop into a lotus blossom?

Gushing came the wind at that moment And the drop was swayed to the sea A beautiful shell waited with its mouth open And the raindrop fell inside to become a pearl.

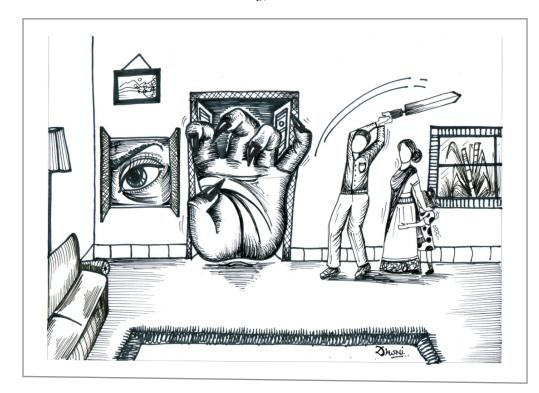
People hesitate and wonder When they leave hearth and home But often leaving home behind Changes them like the drop-turned-pearl.

> *Translated by :* **Apoorva Shekher** English, III year



3 51 113 11 5 21250 1 2 2 9 न १०० मि १० भी ट Oral Narratives विकस्सेव विकास 3 JUN 3 7 5 मम् अ 31330

टेक जुलकेणरी



Source Language: Manipuri

The Demoness, Lai Khutsaangbi

Since time immemorial, wisdom received with age and experience has been passed on from generation to generation by our ancestors in the form of stories. One such story is of the demoness, Lai Khutsaangbi.

In the days of yore, there was a demoness who dwelled in a dense, dark forest. She had long hands because of which she was known as Lai Khutsaangbi.

She captured little girls in the absence of their fathers and feasted on them, devouring their beauty and youth.

Near the forest where the demoness lived, Sashi lived with her parents in a small hut which served as a homestead. Sashi's father had to travel afar from time to time, to earn a living for the family of three.

On one such occasion, the demoness made an appearance. Her voice struck terror as it rang out in a sing-song voice, 'Sashima! Sashima! Is Sashipa in?'

Although scared beyond her wits, Sashi's mother being quick-witted by nature answered to the demoness with an emphatic yes.

The demoness in fear of the father retired for the night. She returned the next evening and the one after, only to go away empty-handed and disappointed in her failure to take hold of the little girl.

Finally after a number of days, the father returned from his journey. After hearing about the events that had transpired in his absence, Sashi's father gave instructions to his wife.

He said, 'Sashima, if the demoness returns, tell her that your husband is away.'

The evening arrived; and like clockwork the demoness returned. Like the previous night, she uttered, 'Sashima! Sashima! Is Sashipa in?'

'Not tonight 'answered Sashi's mother. The demoness filled with glee started stretching her hands in search of Sashi.

Meanwhile, hidden behind the door stood Sashi's father with a long sharp knife in his hand.

As soon as her demonic hands entered the house finding her way in, Sashi's father chopped off her hand.

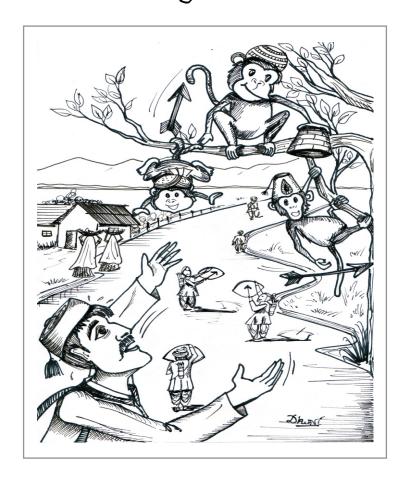
Crying in pain the demoness Lai Khutsaangbi ran away shrieking, her blood staining rows of sugarcane in a field, as it trickled down her wound. She fled back to the forest never to return.

To this day, the red rot in sugarcanes is said to be the accursed blood of Lai Khutsaangbi.

And Sashi lived with her parents, happily ever after, for no harm came to her in the love and care of her parents.

Translated by: **Ishwari Arambam**English, III year

©නා හ් හි <u>මෙළෙ</u>න්දා සහ වලුරෝ.



.... රංදු සිදිහිය සතු කිරීම කර සිදිහිය සතු කිරීම කර සහ සිට සම්බන් සහ සිට සිදුහිය සහ සිට සිට සහ සිට සහ

Source Language: Sinhala

The Hat Seller and the Monkeys

Once upon a time in a faraway village, lived a poor young man in his little hut. Though the man was very poor, he had a great skill in weaving hats out of dry cane. Every day he would weave many hats in many different patterns and go sell them in different villages and towns. He met many travellers on the way who were interested in his colourful and artistic hats. He sold them at reasonable prices so that anyone who liked them could buy them. Also, there were times when he gave away some of his hats to poor children who did not have any money to buy them. Because of the good quality of his hats and the kind nature of his heart, he soon became popular in the region. The travellers who came to his region took the news of the kind-hearted hat seller and his hats to the king. The king, seeing the hats that the travellers brought, immediately wanted to order hats from him.

The hat seller was very excited to hear about the king's interest in his hats. He started making the best hat he had ever made, for the king before the due date. "Kings do not like to be kept waiting" he thought. After several days, the hat seller started travelling to the palace which was far away, with many well made hats for the king and his royal court. It took him days to go to the king's palace. When he finally reached the palace gardens, something unexpected happened. A gang of mischievous monkeys who used to eat fruits from the king's orchards saw the colourful hats in the hat seller's bag. Enchanted by the beautiful colours, the monkeys jumped on the hat seller and took all his hats back to the tree tops. The hat seller was horrified. The king would be furious if he did not get the hats. The guards in the palace tried everything to get the monkeys down with the hats and then decided to shoot arrows at them. The guards were angry and started yelling at the monkeys. The monkeys imitated the angry guards. The hat seller, noticing this pattern, found that the monkeys imitated everything that the people around them did. He immediately stopped the guards from shooting the monkeys with arrows and advised them to throw off their own hats for the monkeys to see. As the guards threw away their hats, the monkeys imitated them and threw away the hats they took from the hat seller. The hat seller quickly collected the hats and brought them to the king.

Hearing about the wise actions of the young hat seller, the king was really impressed and as a gift for his wisdom and kindness, gave him enough gold for a life time. The hat seller went back to his village and lived happily, helping every needy person with his money. He became even more famous for his hats and his kind heart, which made him a rich merchant who never stopped helping others throughout his life.

Translated by: **Dula Jathunarachchi**English, III Year

موتی اور کھو ل

ایک گاؤں ایک آ دی مقا جو ایک اسرکسان کے کھیت میں کام كرتا تقا - ايك دن اس كى بيرى نے اس سے بيكن لانے كوكيا -کسان کے کھیت میں بگین کی مفعل احبی بھی ۔ اس م وی نے کسان سے كما" مالك مين بنيكن لے يوں ؟" مالك دل كا بہت الحجا انسان تقار اس نے کہا جر تمعیں بیسند ہو، لےجائ ، اس م دی نے ایک سرا بیسی ا مقایا اور گھرکی طرف روانہ مہوا۔ گھر پہنچ کر اس نے اپنی بیوی کو بیگن دے دیا . اس کی بیری ا ملے دن جب بیگن کو کاٹ نے کے لئے بیمٹی اور اسے چاتی سے کا شنے ملی تو اسے کسی بیچے کی رونے کی اواز آنے لگی۔ اس نے اکٹ کرچاروں طرف دیکھا۔ سین سے کوئی بحیہ لظ نہیں آیا۔ جب درباری وی بیگی کاف نے لگی تو بھرومیسی بن آواز ، سے سنائی دی . اس خدمسیان دیا که به آواز کبان سے آ دیکھا یہ قربیں کے اندر سے مہر ہے۔ اس نے ڈرتے ڈرتے ہیں کو کولاتو دیکھا کہ اس میں ایک خلفورت سی بچی ہے۔ چران کی بات ید مقی که دی بچی جب روتی متی تو موتی ادر سنستی متی تو میول حبرتے تھے۔ اس کے شوہر کے گھرا نے ہر اس نے سارا دانعہ اسے بتا دیا دورک " یه سماری سی سے سم اسے اپن ادلادی طرح پیاد کرینگے! ان کی این کوئی ادلاد مقی معی نہیں ۔ اس کے شوہر نے ہی فوشی فوشی اس بچی کو گلے لگالیا ۔

ایک دن کی بات ہے ، کسان کی بیری نے ایک چوٹری والی کو گھر بلہ یا اور ادر کہا" نباییت خوبعورت خربعورت چوٹریاں مری بیٹی کو پینا در پی والی

Source Language: Urdu

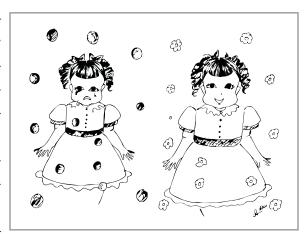
मोती और फूल

एक गाँव में एक व्यक्ति था जो एक अमीर किसान के खेत में काम किया करता था। एक दिन उसकी पत्नी ने उससे बैंगन लाने को कहा। किसान के खेत में बैंगन की फसल अच्छी थी। उस व्यक्ति ने किसान से कहा—"मालिक मैं बैंगन ले लूँ"? मालिक दिल का बहुत अच्छा इंसान था। उसने कहा जो तुम्हें पंसद हो ले जाओ। उसने एक बड़ा बैंगन उठाया और घर की तरफ रवाना हुआ। घर पहुँच कर उसने अपनी पत्नी को बैंगन दे दिया। उसकी पत्नी अगले दिन जब बैंगन को काटने के लिए बैठी तो उसे किसी बच्चे के रोने की आवाज़ सुनाई दी। उसने उठकर चारों तरफ देखा परंतु उसे कोई बच्चा नज़र नहीं आया। जब दोबारा वह बैंगन काटने लगी तो फिर से उसे वहीं आवाज़ सुनाई दी। उसने ध्यान दिया कि यह आवाज़ कहाँ से आ रही है? तो देखा यह तो बैंगन के अंदर से आ रही है। उसने डरते—डरते उस बैंगन को खोला तो देखा कि उसमें एक सुन्दर—सी बच्ची है, आश्चर्य की बात यह थी कि वह बच्ची जब रोती थी तो मोती और हँसती थी तो फूल झरते थे। पित के घर लौटने पर उसने सारी घटना उसे बताई और कहा—"यह हमारी बेटी है, हम इसे अपनी संतान की तरह प्यार करेंगे।" उनकी अपनी कोई संतान भी नहीं थी। उसके पित ने भी खुशी—खुशी उस बच्ची को गले लगा लिया।

एक दिन की बात है, किसान की पत्नी ने चूड़ीवाली को घर बुलाया और कहा "सुन्दर-सुन्दर चूड़ियाँ मेरी बेटी को पहना दो।" किसान की पत्नी ने चूड़ीवाली को एक थाल भर कर मोती और फूल दिए, चूड़ीवाली बहुत खुश हुई। उसी दिन राजा के घर से भी चूड़ीवाली को बुलाने दरबारी आए। किसान के घर से चूड़ीवाली सीधे राजा के महल में पहुँच गई। वहाँ रानी ने भी कहा कि सभी को सुन्दर चूड़ियाँ पहना दो। चूड़ीवाली ने जब सबको चूड़ियाँ पहना दो तो रानी ने उसे केवल एक रुपया दिया। रानी बहुत लालची और कंजूस थी। एक रुपये देखते ही चूड़ीवाली ने गुस्से से मुँह बनाया और रानी को कहा "आपसे अच्छी तो वह किसान की पत्नी है, जिसने मुझे एक थाल भरकर मोती और फूल दिए। यह सुनकर रानी को बहुत बुरा लगा और उसने राजा से कहा—"पता लगाया जाए कि वह किसान कौन है, जिसकी पत्नी ने एक चूड़ीवाली को एक थाल मोती दिए।" कई दिनों बाद राजा ने रानी को बताया कि हमारे गाँव में एक किसान है जिसकी बेटी रोती है तो मोती और हँसती है तो फूल झरते हैं। यह सुनते ही रानी ने उस लड़की से राजकुमार की शादी का प्रस्ताव उस किसान के पास भेजा। किसान और उसकी पत्नी बहुत खुश हो गए कि हमारी बेटी तो अब रानी बनेगी।

राजकुमार की शादी उस किसान की बेटी के साथ हो गई। जब वह शादी करने के बाद महल में आई तो उसे किसी के रोने की आवाज़ सुनाई दी। उसने कमरे में देखा तो पाया एक औरत रो रही है। जैसे ही वह उसके पास पहुँची तो उसे पता चला कि यह राजकुमार की पहली पत्नी है। तभी राजकुमार की पहली पत्नी ने उसे जादू से चिड़िया बना दिया। पूरे महल में नई दुल्हन को ढूँढ़ा जा रहा था परंतु वह कहीं नहीं मिली।

एक दिन अचानक राजकुमार को अपने कपड़ों में मोती और फूल मिले जिसे देखते ही राजकुमार पहचान गया कि यह उसकी पत्नी के हैं। उसने उस धोबी को बुलवाया जहाँ उनके कपड़े धुलते थे। राजकुमार ने धोबी से पूछा कि "यह फूल और मोती कहाँ से आए।" डरते हुए धोबी ने जवाब दिया और कहा, "हमारे घर के सामने एक पेड़ है जिस पर एक चिडिया रोज आकर बैठती है और वह जब गाती है तो फूल और रोती है तो मोती झरते हैं।" राजकुमार ने कहा कि "तुम उस चिडिया को पकड़ कर ले आना। हम तुम्हें मुँह माँगा इनाम देंगे।" धोबी ने उस पेड पर एक पिंजरा बाँध दिया जैसे ही वह चिडिया आई, उसने पिंजरे का दरवाजा बँद कर दिया। राजकुमार को पिंजरे में चिडिया बंद करके देने पर उसे मुँह माँगा इनाम मिला। राजकुमार ने उस पिंजरे को अपने कमरे में टाँग दिया। इसी तरह कई दिन बीत गए। राजकुमार राज एक सपना देखता पर सुबह उसे वह



सपना याद नहीं रहता। एक ही सपना बार-बार आने के कारण एक दिन वह सपना बिल्कुल साफ हो गया। उसने देखा कि चिडिया के सिर पर एक कील है जिसे निकालने पर वह एक सुन्दर स्त्री बन जाएगी। सुबह होते ही राजकुमार ने सबसे पहले चिडिया को पिंजरे से निकाला जैसे ही उसके सिर पर हाथ रखा कि उसके हाथ में कुछ चुभा। उसने देखा यह क्या है! उसे पकड़कर निकाला तो वह चिड़िया वापस सुन्दर-सी स्त्री बन गई। राजकुमार उसे देखते ही पहचान गया कि यह उसकी पत्नी है, फिर राजकुमार और उसकी पत्नी खुशी-खुशी रहने लगे।

> अनुवाद: मुशर्रत हिन्दी, द्वितीय वर्ष

निडर पाड़ा

एक बार की बात है। एक गाँव में एक ग्वाला रहता था। जो बहुत सीधा-सादा और भला मानस था। उस ग्वाले के पास सात भैंसें थीं और वह ग्वाला उन सातों भैंसों को बडे प्यार से पाला करता था। कुछ दिनों बाद सातों भैंसों को बच्चे हुए। सातों भैंसों में से छ: भैंसों को तो पार्डी और एक भैंस को पाडा पैदा हुआ। यह सब देखकर ग्वाला बहुत खुश हुआ। वह प्रतिदिन सभी भैंसों को और उनके बच्चों को चारा खिलाता था। वह सबसे ज्यादा प्यार पाडे से करने लगा था क्योंकि उन छ: पाडियों में वह एक अकेला पाड़ा जन्मा था। यह सब देखकर पाड़ा बहुत खुश हुआ और गर्व महसूस करने लगा। धीरे-धीरे वह घमंडी भी हो गया और उसे लगने लगा कि वह कुछ भी कर सकता है। वह अपने भोजन के लिए दूर-दूर तक चरने जाने लगा। इसी कारण वह काफी हृष्ट-पृष्ट और मोटा ताजा भी हो गया। यह सब देखकर उसकी सभी माँऐं खुश होती थीं।

एक दिन की बात है, वह छ: भैंसें जिनकी बेटियाँ थीं, उन्होंने उस पाडे से पूछा, "अच्छा ये बताओ कि तुम इतने हृष्ट-पुष्ट कैसे होते जा रहे हो, हमारी पाडियों को तो देखो ये तो इतनी अस्वस्थ और दुबली-पतली हैं। जरा अपना राज़ बताओ और जो तुम करते हो इन्हें भी सिखाओ।" यह सब सुनकर पाड़ा मन ही मन में खुश होने लगा। और सोचने लगा कि मैं ही सबसे अच्छा हूँ, इसलिए तो सभी मेरी तारीफ कर रहे हैं। फिर पाड़ा ने अपने मन में कुछ सोचा और कहा, "भई देखो जहाँ में घास चरने जाता हूँ, वहाँ बहुत खतरा है और वहाँ जाने में सावधानी भी बरतनी पड़ती है. अगर फिर भी आप लोग तैयार हैं तो इन सब को मेरे साथ भेज सकती हैं।" इस पर सभी माँऐं कहती हैं कि जब तम इन खतरों को पार कर लेते हो तो ये पाडियाँ भी कर ही लेंगी। साथ ही साथ इनकी सेहत भी अच्छी हो जाएगी। अगले दिन पाड़ा छ: पाड़ियों को लेकर घास चरने गया। वह जहाँ घास चरने गये वहाँ जगह-जगह गड्ढे थे और जैसे-जैसे चरने के लिए आगे बढ़े, वैसे-वैसे सभी पाड़ियाँ एक-एक करके गड्ढ़े में गिरती गयीं, तब पाडा वापस आ गया और झुठे आँसू बहाकर सारी भैंसों को दिखाया। सारी माँऐं अपनी बच्चियों के लिए रोने लगीं।

ऐसे ही कुछ दिन बीत गये। धीरे-धीरे वह पाड़ा और भी चतुर और निडर होता गया। सारी माँओं का प्यार उस अकेले को ही मिलने लगा। वह और भी निडरता के साथ, बिना किसी डर के कोई भी कार्य करने लगा। एक दिन की बात है किसी खेत में गन्ने बोए हुए थे। पाड़ा उस गन्ने के खेत में घुस गया और चर-चर के सारे खेत को खराब कर दिया। वह खेत एक बाघ का था जिसकी रखवाली एक सियार करता था। सियार बहुत आलसी था और रखवाली की जगह सोता रहता था। बाघ ने जब खेत का हाल देखा तो उसने सियार को बहुत डाँटा और उससे कहा, कि "अगर तुमने कल से खेत की रखवाली अच्छे से नहीं की तो तुम्हें नौकरी से निकाल दिया जाएगा।" अगले दिन जब सियार खेत की रखवाली कर रहा था तो उसने एक पाड़े को देखा जो खेत को खराब कर रहा था तो वह उससे बोला :-

> "पड्रम, पड्रम, पड्रम, खेत मत चरो. बाघ मामा आएँगे, चीर-फाड खा जाएँगे।"



...ओकरा बाद सियार जा के इ सब बात बाघ के बता देवेला। ओकरा बाद बाघ सियार से कहेला की अच्छा तु काल जा आ खेत के रखवाली करअ आ हम पीछे लुकाइल रहेम आ देखेम की इ सब के करअता। अगला दिने सियार अहिसई कईलस आ रखवाली करई लागल फेर दुबारा सं उहें बतीआ दोहरबलस आ कहलस

"पड़रम, पड़रम, पड़रम खेत मत चरअ बाघ मामा अईहन चीड़ फार खा जईहन"

तब ऐपर उ पारा बड़ा मजा स कहलस कि:-

"सात भईस के दूधा हम पीहीं, सोरह सेर घीउ खाई, कहाँ बारन तहार बाघ मामा, एक ताड़ लड़ जाई"

पाड़ा के इहे कहते बाघ निकल आइल आ पाड़ा स लड़ाई क देलस उ पाड़ो हार न मनलस आ लड़े लागल। बाघ पाड़ा के मारत-मारत घायल क देलस आ लढ़ाई में पाड़ा के दिमाग में एगो सींघो के तुड़ देलस। वो ही लड़ाई में पाड़ा के दिमाग में एगो बात अइलाल आ उ आपना सींघ के उठइलस आर ओहिजा एगो कुकुर रहे उ अपना सींघ के कुकुर के दे देलस आ कहलस इ सींघ के हमरा माई सं के लगे पहुँचा द। उ कुकुरा पाड़ा के सींग के भइस सन के लगे पहुँचा द...

स्रोत भाषा: भोजपुरी

इस पर पाड़े ने बहुत शान से उत्तर देते हुए कहा:-

"सात भैंसों का दूध मैं पीऊँ, सोलह सेर, घी मैं खाऊँ, कहाँ हैं तेरे बाघ मामा, पटक कर मज़ा उन्हें चखाऊँ।"

सियार ने जाकर सारी कथा बाघ को सुनाई। बाघ ने उससे कहा, "कल तू फिर से रखवाली करना, मैं देखता हूँ किसमें इतनी हिम्मत है जो मुझसे नहीं डरता। अगले दिन बाघ भी सियार के पीछे खेत में छिप गया। इन सब बातों से अनजान पाड़ा मज़े में आकर खेत चरने लगा। सियार ने फिर वही गीत दुहराया:-

> "पड़रम, पड़रम, पड़रम, खेत मत चरो, बाघ मामा आएँगे, चीर-फाड़, खा जाएँगे॥"

इस पर पाड़े ने भी शान से अपनी बात दुहराई

"सात भैंसो का दूध मैं पीऊँ, सोलह सेर घी मैं खाऊँ, कहाँ हैं तेरे बाघ मामा, पटक कर मज़ा उन्हें चखाऊँ॥"

इतना कहा ही था कि बाघ उछल कर सामने आया और पाड़े को पकड़ लिया। वह उससे कहने लगा अब मैं तुझे मारूँगा, इस पर पाड़ा भी नहीं डरा और वह बाघ से लड़ने लगा। लड़ते-लड़ते पाड़ा घायल हो गया। उसकी सींग भी टूट गई। तभी पाड़े ने सोचा कि क्यों न वह अपनी टूटी हुई सींग को अपनी माँओं के पास भेज दे तािक वह सब उसके पास आ जाएँ और उसकी मदद करें। हुआ भी ऐसा ही पाड़े ने कुत्ते के ज़िरए अपनी टूटी हुई सींग को अपनी माँओं के पास भिजवा दिया। बच्चे का सींग देखकर उसकी सभी माँऐं परेशान हो गई और उन सभी को आभास हो गया कि उनका बच्चा किसी परेशानी में है। उसके बाद सभी माँऐं वहाँ पहुँच गई जहाँ बाघ और पाड़े की लड़ाई चल रही थी। वहाँ पहुँच कर सभी माँओं ने बाघ पर हमला कर दिया और बाघ मारा गया। अंत में सभी माँऐं पाड़े को लेकर खुशी–खुशी घर की ओर चली गईं।

अनुवाद: **ज्योति कुमारी** हिन्दी, द्वितीय वर्ष

चतुर मिनकी

एक चिड़कला पेड़ पर घोसलों बनार मजास बी पेड़ पर रहतो। एक दिन बो दानू पाणी क चक्कर में एक चोखी सी फसल वाला खेत में पूग गयो। बठ लहलहाती और मोटा-मोटा दाणा देखकर बो बोत खुश हुयो।

बी ख़ुशी में बो रात को आपका घरा जाबो ही भूल गयो। बो बठ अतो मग्न हुग्यो कि घरा जाबा ही कोनी चायो और बिका दिन मजा स बठही बित्बा लाग्या।

बिठन शाम को एक खरगोस बी पेड़ पर आयो जठ बी चिड़कला को घोसलों हो। पेड़ बी ऊचों कोनि हो, इलिए खरगोस बी घोसला म झाँक कर देख्यो, जणा बो झाँक कर देख्यो तो बिण पतो चलो कि बो घोसला खाली पड़यो है। घोसलों बोत सुन्दर हो और अतो बड़ो बी हो कि खरगोस बीम आसानीस आ जाब "बिन ओ बणो बणायो घोसलो पसंद आय गयो। बो लालच में पड़ गयो और बो बी घोसला म रेबा के फैसला कर लियो।

थोड़ा दिन बाद बो चिड़कला खा-खाकर मोटो-ताजो बण गयो और बिन बी खेत सू रेबामसू धाप गयो। अब बिण आपका घोसला की याद आई। बो आपका घोसला में पाचो आयगो। बो पाचो आयो और देख्यो कि घोसले म एक खरगोस बैठो हो। बिन बोत गुस्सो आयो।

बो खरगोस न बोल्यो, "चोर कठंया को, म कोनी हो तो मारा घरा म घुस गयो?

'चालो निकलो मारा घर स, सरा भी शर्म कोनी आई मारा घरा रेता हुआ...

स्रोत भाषा: मारवाडी

30 | **Code** Journal of Translation 1. चिड़ा-छोटी चिड़िया 1. चिड़ा-छोटी चिड़िया

चतुर बिल्ली

एक चिड़ा¹ पेड़ पर घोंसला बनाकर मज़े से उस पर रहता था। एक दिन वह दाना-पानी के चक्कर में एक अच्छी फसल वाले खेत में पहुँच गया। वहाँ लहलहाती फसल और मोटे-मोटे दाने देखकर वह बहुत ख़ुश हुआ।

उस खुशी में वह रात को अपने घर जाना ही भूल गया। वह वहाँ इतना मग्न हो गया कि घर गया ही नहीं और उसके दिन मज़े से वहीं बीतने लगे।

इधर शाम को एक खरगोश उस पेड़ पर आया, जहाँ उस चिड़े का घोंसला था। पेड़ बिल्कुल भी ऊँचा नहीं था, इसलिए खरगोश ने उस घोंसले में झाँककर देखा। जब उसने झाँककर देखा, तो पता चला कि घोंसला खाली पड़ा है। घोंसला बहुत सुंदर था और इतना बड़ा कि उसमें खरगोश आसानी से आ सके। उसे यह बना बनाया घोंसला पसंद आ गया। वह लालच में पड़ गया और उसने उसी में रहने का फैसला कर लिया।

कुछ दिनों बाद वह चिड़ा खा-खाकर मोटा-ताज़ा बन गया और उस खेत में रहने से ऊब गया। अब उसे अपने घोंसले की याद आई। वह अपने घोंसले में फिर से लौट आया। जब वह लौटा तो उसने देखा कि घोंसले में एक खरगोश बैठा है। उसे बहुत गुस्सा आया। उसने खरगोश से कहा, "चोर कहीं के, मैं नहीं था तो मेरे घर में घुस गए?"

"चलो निकलो मेरे घर से, ज्रा भी शर्म नहीं आई मेरे घर में रहते हुए।"

खरगोश शांति से जवाब देने लगा, "कहाँ है तुम्हारा घर? कौन-सा तुम्हारा घर?"

यह तो मेरा घर है। पागल हो गए हो तुम! यहाँ तो कोई कुआँ, तालाब या पेड़ छोड़कर जाता है तो भी अपना हक गँवा देता है और तुम इस घर की बात कर रहे हो! यहाँ तो जब तक हम हैं, वह अपना घर है। बाद में तो उसमें कोई भी रह सकता है। अब यह घर मेरा है। बेकार में मुझे तंग मत करो।

यह बात सुनकर चिड़ा कहने लगा, "ऐसे बहस करने से कुछ हासिल नहीं होने वाला। किसी धर्म पंडित के पास चलते हैं। वह जिसके हक में फैसला सुनाएगा ये घर उसका हो जाएगा।"

उस पेड़ के पास ही एक नदी बहती थी। वहाँ पर एक बड़ी-सी बिल्ली बैठी थी। वैसे तो यह बिल्ली इन दोनों की जन्मजात दुश्मन है, लेकिन वहाँ और कोई भी नहीं था इसलिए उन दोनों को उसके पास जाना पड़ा और दोनों ने बिल्ली से ही न्याय लेना उचित समझा। सावधानी बरतते हुए वे बिल्ली के पास पहुँचे और अपनी समस्या बताई। उन्होंने कहा, "हमने अपनी उलझन बता दी, अब इसका समाधान हम आपसे सुनना चाहते हैं। जो सही होगा उसे यह घोंसला मिला जाएगा।"

अरे रे!! यह तुम दोनों कैसी बातें कर रहे हो, हिंसा करना पाप है। मैं न्याय करने में तुम्हारी मदद करूँगी। फिर बिल्ली वापस बोली मैं तुम्हें एक बात बताना चाहती हूँ।

खरगोश और चिड़ा खुश हो गए कि अब तो फैसला होकर ही रहेगा। वे दोनों बिल्ली के पास चले गए। जैसे ही दोनों करीब आए उसने खरगोश को पंजों में तथा चिड़े को अपने मुँह में पकड़ लिया, और उस बिल्ली ने दोनों का काम एक साथ तमाम कर दिया।

> अनुवाद: **बबीता कुमारी** हिन्दी, प्रथम वर्ष

मिन्दंश- नाक्षिर



2823 54 241822 22244 Myster Lyder? - 2823 54 241822 241824 Myster Lyder? - 2923 54 24182 24182 24182 24182 24182 24182 24182 24182 24182 24182 24182 24182 24182 24183 25/2 2418

Source Language: Bangla

The Ant Returns The Favour

On a tree that was hunched over a pond, lived a dove. On the branch next to the dove, lived an ant. The dove and the ant were neighbours. Most part of the tree was bent over the pond, so it could be said that they lived just above water. Under the branches they lived on, was calm, green water.

One day the ant fell in the water and started to drown. He relentlessly tried to keep himself from dying. The dove saw the ant drowning. Her heart went out to her neighbour and she decided to help him. She got an idea. She plucked a leaf from the tree and threw it in the water. The ant climbed onto the leaf-boat and safely floated in the water. The dove then picked up the leaf along with the ant and brought it to the land. The ant felt very grateful. He said, "Friend, I will never forget how you saved my life".

The ant never did forget how the dove had helped him. Every other moment he thought how he had received a new life and how the dove brought him back from the clutches of death. He saw her everyday and hoped that he could return the favour someday.

One afternoon, he got the opportunity. The dove was sitting on the tree distractedly. The ant noticed that a bird hunter was aiming his arrow at her. The ant had to save her life. He climbed down the tree, hurriedly crossed the distance and bit the hunter's foot, just as he was going to shoot the arrow. The hunter's foot burned from the ant's bite and the arrow went astray. The dove on hearing the noise flew away and disappeared. The ant, hidden in the grass, breathed a sigh of relief.

Translated by:
Srijonee Basu
English, I year

32 | Code Journal of Translation Code Journal of Translation 33

କୁତ୍ୟ ସ୍ୟୁ କ୍ଲୋକ

ସୂହ୍ୟ ସ୍ଥ ଲେ ଅନ୍ତର୍କ ପାଳେଭୂଥିନ । ପାହେ ହାଡ କୁ ମାହ୍ୟ ସୂଳେ ଦ୍ଧିନ୍ଦ୍ର କାଳ ହାତ୍ୟକୃତ ହଳି ଲିମ୍ବା ହୋଇ୍ସଲ୍ଥା, ତହା ବେଧ୍ୟାତ କ୍ରାହ୍ର ପ୍ରତ୍ର କୁଟ୍ର ସ୍ତ୍ରକୁ ଧୋଡିକାକୁ ଲାଗିଲା । ଛିନ୍ତୁ ଯେ ବୁଦ୍ୱ ଅ ବ୍ୟେକ କୋଡ଼ି ନିଳିଲ୍। କାହିଁ । ଓଧିପାର୍ଷ ପାତକୁମାହୀ ଦୋଷ୍ - ହୋଷ୍ଟେ କାର୍ଯିନାକୁ ଲାଣିଲ୍ଲ । ଧାଉଞ୍ଧାରୀଞ୍ଚ ୧୯ମାଉଁ-୧୯ମାଧି ନିରାଥରେ ପ୍ର ଓଲାଇଥିଏ ଦିହ ପଞ୍ଚୀ । ୧୯୧୯୧୧୧ ୧୯ ଅବହ୍ୟ ମଧ୍ୟ ତାଳି -ତାନି ଜଳ୍ଭର ଆଠାରୁ କହୁଥିଲା ବ୍ୟତ୍ତେଙ୍କ ବାରୀତ ପିଞ୍ଜ ୧ସ ଅଧି। ଥାଅ ସିଧେ ସିଠ ହୋଞ୍ ପ୍ରତ କଣ୍ଡା - " ମାଁ । ଜାଗଣ ଓଡ଼ିଆନ ଓଡ଼ିଆର ଅନ୍ଥିଥି) " ब्रिश् रिश् कर्श्वाक् लाडीका - "क्रिस में प्रयुक क्रिले) res 1" ସିଟାପ୍ଟର ଏହିଥି ଦେଅ କାଷ୍ଟ ହାଣ୍ଡ ୧୯୭। ୧୯୬୩ । ୧୯୬୩ । CIENT ES SES SU EWIER EVIER JUST CINSEN अक्ष्यके हिल्लाक्ष्य । १०० । स्टिस में प्राप्त का के प्रा ७२ वर्ग्ना । पर्न कर्नेला - "हिंदों हा दूल्र शल्प । हूँ राष्ट्रिक् ପାଳ । ମୁଁ କୋଟୋଟ ହୋଇ ଦୋଟେ ହରି ଓ ଅଧାନାନିତ କ୍ରିମ୍ୟୁ । ୧୯୩ କରିଆପର ୧୯୮୦ छ। । ଅଧି। ୧୯୭୧। ଓଡ଼ି याणे में 6 जलका 62 क्लेश हैं। ह जिल्ह कर्मा हिंगू 601 d105 000 810 \$ 000 - 52 001000 11 ନ୍ତାରତୀ ଅନୁଥା। - , ୧୦୮ ଦାରୀ ଶାଷ୍ଟା ସୋହେ ଓ ପାଥଥିଲା ଏହି ଭ୍ୟ ୧୯୦୧୫୧ ଧାର ଓଡ଼ି ୧୯୯୮ । ଓଡ଼ି ଅପ୍ତି ପ୍ରେକ୍ଷ ମଧ୍ୟ ପ୍ରତ୍ୟ ହେ ହେଥି । ଓଡ଼ି ଅପ୍ତି ଅଧି । ଓଡ଼ି ଅଧି । ଓଡ଼ି ଅଧି । ଓଡ଼ି ଅଧି । ଓଡ଼ି ଓଡ଼ିଆ । विक् प्रतिष्ठ । क्ष्म स्थापने। क्ष्म त्ये त्रक्षेत्र त्राप्ति राष्ट्र निर्देश र कार्क र हार्वार् हार्यु के। एते रिक्षियु के कार्य तरी कारितार क्यांका । हार क्षेत्रमें ठिल प्रेरायर विकारिक र्वेट ६० । क्या किला किला हार्क करी र के के कित ख्या राश्य कल्य, काक्ष्यवाम् लह्मके ह्या... कृष्ट प्रह्मक्ष्य र प्राप्त कुम् ह्या त्र्य प्राप्ती र्यटायक्षे । वास्त्र र्यात्रह्म इपेस्ट क्ष्यम टह्मु ये द्याली प्रायुष्ट्र ।

Source Language: Odia

बूढ़ी औरत

राजा चन्द्रसेन की एक बेटी थी जिसका नाम सुकेशिनी था। सुकेशिनी बहुत अहंकारी तथा क्रूर स्वभाव की कन्या थी। उससे महल के दास-दासी बहुत भयभीत रहते थे। छोटी-सी भूल हो जाने पर भी वह दास-दासियों को चाबुक से मारती थी।

उसी राज्य के मंत्री थे सुधाकर। उनकी एकमात्र कन्या का नाम था रूपवती। वह रूपवती होने के साथ-साथ गुणवती भी थी। इसके अलावा वह सरल और दयालु भी थी।

एक दिन सुकेशिनी शिकार करने के लिए निकली। रूपवती शिकार के लिए जाना नहीं चाहती थी लेकिन राजकुमारी के भय से जाने के लिए राजी हो गयी।

जंगल में बहुत दूर तक जाने के बाद भी सुकेशिनी शिकार नहीं कर पाई, इसलिए वह अपने घोड़े पर बैठ जंगल के उत्तर दिशा की ओर बढ़ने लगी। जबकि राजा चन्द्रसेन ने उस ओर जाने के लिए मना किया था।

राजकुमारी को उस दिशा की ओर बढ़ते देख सभी ने मना किया लेकिन राजकुमारी ने किसी की न सुनी। मजबूर होकर सेना और रूपवती उसके पीछे-पीछे गये। कुछ दूर जाने के बाद राजकुमारी इन सबसे अलग रास्ते पर चली

कुछ दुर जाने के बाद राजकुमारी ने देखा कि एक पेड के नीचे एक बढ़ी औरत सोई थी जिसकी नाक हाथी की सुँड जितनी लम्बी थी।

राजकुमारी उसके पास जाकर कहने लगी "ए बूढ़ी! मुझे ये जंगल पार करने का रास्ता बता।" बूढ़ी औरत ने कॉॅंपते हुए कहा-"बेटी मुझे बहुत भूख लग रही है।" राजकुमारी ने कहा "तू अगर मुझे रास्ता नहीं बताएगी तो तेरी नाक काट डालुँगी।"

"तु मेरी नाक काटेगी? तेरी नाक मेरी नाक जितनी लम्बी हो जाए।" यह कहकर वह बूढ़ी औरत जंगल में अदृश्य हो गई।

बूढ़ी औरत के चले जाने के बाद राजकुमारी सुकेशिनी की नाक हाथी की सूँड़ जितनी लम्बी हो गई। यह देख राजकुमारी परेशान होकर बूढी औरत को ढुँढने लगी लेकिन वह बूढी औरत कहीं नहीं मिली, इस कारण राजकुमारी जोर-जोर से रोने लगी।

राजकुमारी को ढूँढते-ढूँढते रूपवती भी जंगल में खो गई। जब वह राजकुमारी को पुकारते हुए जंगल में आगे बढ़ रही थी तब उसकी दृष्टि भी उस लम्बी नाक वाली बूढ़ी औरत पर पड़ी। वह उस बूढ़ी औरत के पास गई और कहने लगी- "माँ! आप अकेली इस घने जंगल में क्या कर रही हैं?"

बुढी औरत कहने लगी-"बेटी मैं बहुत भूखी हूँ।"

रूपवती ने पास के पेड़ों से फल लाकर बूढ़ी औरत को दिए। फल खाते ही वह बूढ़ी औरत एक सुंदर परी में परिवर्तित हो गई। यह देखकर रूपवती आश्चर्य-चिकत हो गई।

परी कहने लगी-"मेरा नाम फूलरानी है। मैं परियों की रानी हूँ। मैंने क्रोधित होकर एक ऋषि को अपमानित किया था। उनके अभिशाप से मेरी नाक लम्बी हो गई थी और मैं इस जंगल में भटक रही थी। तुम बहुत दयालु हो इसलिए तुम्हारे हाथ से फल खाने से मैं शाप-मुक्त हो पाई।"

रूपवती ने कहा-"हे परी रानी! मुझे इस घने जंगल से निकलने का रास्ता बताइए।"

परी रानी ने रूपवती को एक कमल का फूल देकर कहा-"यह कमल का फूल मात्र एक वरदान दे सकता है।" यह कहकर फूलरानी उड़कर परी लोक में चली गई।

कमल के फूल को हाथ में पकड़े हुए रूपवती जंगल से निकल आई और सुकेशिनी को अपनी लम्बी नाक को पकड़कर रोते हुए देखा। सुकेशिनी और रूपवती दोनों ने अपने–अपने साथ हुई घटना के बारे में एक–दूसरे को बताया।

सुकेशिनी ने सोचा रूपवती शायद कमल के फूल से वरदान में राज्य माँग लेगी लेकिन रूपवती ने सुकेशिनी का नाक ठीक होने का वर माँगा जिससे राजकुमारी की नाक ठीक हो गई। इस घटना के बाद दोनों राजमहल लौट गई। इसके बाद राजकुमारी दयालु बन गई।

> अनुवाद: **अर्चना मोहंती** हिन्दी, द्वितीय वर्ष

The Magical Myna

Once upon a time there lived a Sage with his beautiful daughter in his hermitage in a forest. One day the Sage planned to go to a mountain for meditation, leaving his daughter alone in the hermitage. The hermit girl had immense love for birds and animals. She would often sit in solitude to listen to the melodious voices of birds. A few days later a very well-known and reputed sage stopped at the threshold of her hut. But the girl was completely absorbed in listening to the music of a myna's song. When the girl did not answer the repeated calls of the sage, he cursed her — "May you too become a myna"! The girl became aware of her surroundings and could not understand what she should do to placate the sage. After many requests and pleas, the sage said — "I cannot take my curse back but the day you marry a human, you will transform into the girl you are". Having said this, the sage went and within a few minutes the girl was transformed into a myna.

Depressed and despondent, the girl-turned-myna went to live on the branch of a tree outside her hermitage. The myna would sing daily to allay her sorrow. One day a handsome Prince came to hunt in that forest. When he heard the sweet voice of this myna, he turned in the direction of that voice. But he could not find anyone there. The myna was hidden in the lush greenery of the tree. The Prince was so enchanted by this voice that he started coming to the forest every day in the hope of finding the singer. He would listen to the voice everyday and finding no one singing anywhere, would return to his palace. But one day the Prince made a firm plan to find the girl singing in the forest and thought he would marry her. The next day he tried hard to find the singer but she was nowhere to be found. The distressed Prince then sat on a stone slab where he heard a peculiar voice coming from the tree adjacent to the stone —"I am here! I am here".

The Prince looked above but found no one. Again the voice came — "I am here". This time the Prince got really curious. His searching eyes could only find a lone myna sitting on a bough of that tree. This was a revelation for the Prince. He was dumbfounded. The myna added in an unusually funny tone — "the voice you hear every day here is none other than me singing to relieve my sorrow". The Prince was surprised to hear it but he praised this art of the myna. The myna then said — "if you marry me, I will sing such songs everyday for you". The prince was troubled at the thought of marrying a myna and went away. All the hopes of the hermit girl-turned-myna were shattered.

That night when the prince was reminded of the myna, he realized he could not get the bird and the bird song off his mind. The next morning, the prince went to his mother, who was also



यान यि आसे क्षांसि गयवन वाजिनि हुन्ज क्या ज़ि करने वं तिमस स्रीत खांदर वायिम कीह अमि राजकुमारन कर बड़ कृशिश गयवन वाजिन छांड़नेचु तित आंसस मिन्ज़- मिन्ज़ यिवान म्यवन आकाज़, पत नावुमेद गांछित न्यू हुआ असे पलस प्यठ अभि कुलिस निश्चित आते हुपार्य - यपार्य वुद्धित असुस न काह ति बोज़न यिवाव । अमी कुलिलंजि प्यठ आयस आवाज - "बह्यस्य यवयाद".

Source Language: Kashmiri

the queen of the palace, and said, "I am going to marry a myna". Hearing this, the queen's sorrow knew no bounds. Her only son was going to marry a bird! Could there be another mismatched marriage! The queen was deeply aggrieved but was totally helpless. The same evening, the prince returned to the palace with the myna as his bride. On one hand, he was happy at the thought of listening to this melodious voice of the myna everyday but on the other hand, he was upset that the whole kingdom will now poke fun at him. He reached his room while thinking about his wretched condition. When he set aside the curtain of his room, he could not believe his eyes. A tenderly beautiful girl was sitting in his room in bride's clothes. It was the hermit-girl. The girl then said, "Please don't be so surprised. I am the same myna whose voice cast a spell on you". The girl narrated the whole story of the curse to the prince. The prince was full of exultation to see the girl in place of the myna.

Everyone really admired the prince's choice in the royal court and they lived happily ever after.

Translated by : **Apoorva Shekher**English, III year

भारे वैसे सा मंग हा रहे



.... रिंग हो हुं विश्व हिर साम हुँ इ विग मी। सरें हिम ते पाटी हुं है धूग उवरा देविभा डां हुव बही डेम्नी राल हुइरा गेरिआ संसे भारिभा डें यंनिभां दिस धूर्ग हूँ भरइ रे आवाम दिस हुँ विभा।

ਸਿੰਉਂ ਪ੍ਰਿਹੇ ਦੀ ਪੂਛ ਡੱਡੂ ਦੀ ਲੱਭ ਨਾਲ ਬੰਨੀ ਹੋਈ ਸੀ, ਇਸ ਕਰਕੇ ਡੱਡੂ ਵੀ ਬਾਜ਼ ਦੇ ਰੋਜਨ ਦਾ ਜ਼ਿਕਾਰ ਹੋ ਗਿਆ ...

Source Language: Punjabi

Never stay in Bad Company

Once upon a time, there was a rat who wanted to cross the river. Whenever he saw fishes and frogs swimming in the river, he wondered how nice it would be if he too could swim like them.

He shared his wish with a frog, saying, 'Brother, if you help me cross the river, I will be thankful to you for the rest of my life'.

The frog was of a naughty and mischievous nature. He quickly agreed. But in his heart he decided to frighten the rat by pretending to drown him in the river, which he thought would be fun.

The frog told the rat, 'Brother, if you want to cross the river, tie your tail to my leg. Then I will swim and take you across'.

As asked by the frog, the rat tied his tail to the frog's leg. As soon as the rat finished tying, the frog dragged him into the water and began suffocating him underwater.

There was a hawk flying over the river. When it saw a rat swimming in the river, it quickly descended and clenching the rat in its claws, flew up into the sky.

Since the rat's tail was tied to the frog's leg, the frog too fell prey to the hawk. That is why it is said that a bad person not only drowns himself, other people drown along with him. Being with a bad person never turns out in one's favour.

Translated by : **Dishpreet Kaur Saluja**English, III year

راحہ کے سر بیرسنل



... الیا کرتے جش کا دن آجا تا ہے۔ نگر کے سمبی لوگ الجم مستری ایرجا وفیرہ سنگت سن کے لئے راج دمارس حافل ہوجاتے ہیں سنگت کار سنگیت کار سنگیت کی تان جمیز نے کے لئے تیا رہے تے ہیں۔ جیے ہی ہیں سنگت کار نے ستار ہجا نا مشروع کیا تب ہی اس سے آواز آئی " راج کے سربیر سینگ ہیں ، راج کے سربیر سینگ ہیں ۔۔۔ " راج کے سربیر سینگ ہیں ، راج کے سربیر سینگ ہیں ۔۔۔ " وہاں ہر موجود سب ہی لوگ والی دولسرے کو دیکھنے نگاہیں ادر کسی کو کھو سے جہ سی ہوئی ایک دولسرے کو دیکھنے نگاہیں ادر کسی کو کھو سے جہ سی ہوئی ہا تی ہے ۔ اور احد کے سربیر سینگ ہیں ۔۔۔ " ہو میں ایک سی ایک ہی کا دولت ہیں ۔۔۔ " ہو میں ایک ہی کا دار جی ہے۔" راج کے سربیر سینگ ہیں ۔۔۔ " واج کے سربیر سینگ ہیں ۔۔۔ " واج کے سربیر سینگ ہیں۔ " واج کے سربیر سینگ ہیں۔ " واج کے سربیر سینگ ہیں۔ " واج کے سربیر سینگ ہیں ۔۔ " موجود سب ہی حافرین ساسی کے مار بے ورٹ پوٹ ہوئی جو ما تے ہیں اور سب ہی کو راج کے سینگ کے مار بے ہیں بیتم چیل جاتا ہے ! ...

Source Language: Urdu

राजा के सिर पर सींग

बहुत समय पहले वीरपुर नगर में धनंजय नाम का एक राजा रहता था। वह राजा बहुत अत्याचारी था। इसी कारण उस नगर का हर व्यक्ति उससे डरता था और उसके आदेश का पालन करता था। अगर कोई ऐसा नहीं करता, तो राजा उसे कठोर दण्ड देता। एक दिन राजा ने देखा उसके सिर पर सींग उग रहे हैं। राजा इस बात से परेशान हुआ, वह नहीं चाहता था कि किसी को इस बात का पता चले और ऐसा ही हुआ। इस बात की जानकारी उस नगर में किसी को भी नहीं थी। किसी को इसके बारे में पता न चले इसीलिए राजा हर समय अपने सिर पर मुकुट पहने रखता था।

धीरे-धीरे समय बीतने लगा। समय के साथ राजा के बाल भी बहुत लम्बे होते जा रहे थे, जिन्हें कटवाने के लिए नाई की ज़रूरत थी। उसी नगर में टनाटन नाम का एक नाई रहता था। वह बहुत हँसमुख और बातूनी था, पर वह अपने काम में बड़ा अच्छा था। एक दिन टनाटन नाई को राजा के बाल काटने के लिए राजदरबार में बुलाया गया। राजा उसे एक अलग कक्ष में ले गया, जहाँ कोई उसके सींग को न देख सके, परंतु जैसे ही राजा ने अपने बाल कटवाने के लिए सिर से मुकुट उतारा, तभी उसके सींग दिखने लगे, यह सब देखकर नाई ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगा, इस पर राजा गुस्से में चिल्लाते हुए कहा कि "अगर इस बात का पता किसी और को चला, तो तुम्हें फाँसी पर चढ़ा दूँगा।"

नाई राजा के बाल काट कर अपने घर वापस लौट आया, किन्तु वह बहुत चिंतित हो गया क्योंकि किसी को यह बात न बताने के कारण उसका पेट मटके की तरह फूलता जा रहा था। कई बार उसने अपनी पत्नी को सारी बात बताने की कोशिश की, परंतु वह राजा के डर से कुछ नहीं बता पाया। ऐसे ही करते-करते तीन महीने बीत गये और उसका पेट दिन-प्रतिदिन और भी फूलता गया। एक दिन नाई ने यह निश्चित किया कि वह राजा के सींग वाली बात किसी न किसी को बताकर ही रहेगा, और वह नगर से दूर एक जंगल में चला गया। जंगल के बीचों-बीच एक पेड़ था जिसका तना खोखला था। उसके सामने जाकर टनाटन ने सब कुछ बोल दिया। ऐसा करते ही उसका पेट पहले जैसा सामान्य हो गया। वह ख़ुशी-ख़ुशी अपने घर लौट आया।

कुछ दिन बाद राजा के दरबार में बहुत बड़े महोत्सव की तैयारी हो रही थी। पूरे राज दरबार को सजाया जा रहा था। सभी नई चीज़ें बनाई जा रही थीं, नए संगीत वाद्ययंत्र बनाने के लिए लकड़ी की ज़रूरत थी। सिपाही लकड़ी के लिए उसी जंगल में गये और अनजाने में उसी पेड़ की लकड़ी काटकर ले आए। अब सभी वाद्ययंत्र उसी पेड़ की लकड़ी से बनाये गये। उससे सितार, सारंगी, तबला आदि अनेक वाद्ययंत्र बने।

इसी तरह महोत्सव का दिन आ गया। नगर के सभी लोग राजा, मंत्री, प्रजा संगीत सुनने के लिए राज दरबार में उपस्थित हुए संगीतकार संगीत की तान छेड़ने के लिए तैयार थे ज्यों ही पहले संगीतकार ने सितार बजाना शुरू किया, त्यों ही उससे आवाज़ आई "राजा के सिर पर सींग है" "राजा के सिर पर सींग है…"

वहाँ उपस्थित सभी लोग आश्चर्य-चिकत होकर एक-दूसरे को देखने लगे। किसी को कुछ भी समझ नहीं आ रहा था। उसके बाद सारंगी बजाई गई तो फिर वही आवाज़ आई। "राजा के सिर पर सींग है...."

फिर तबला बजाया गया उससे भी वही आवाज आई "राजा के सिर पर सींग है..."

अनुवाद: **पिंकी** हिन्दी, द्वितीय वर्ष

ఉప్పుచేపల వేపుడు



... కలత చెందినె యువరెజు ని చూసి చేప అన్నది," నిరెస చెందకు యువరెజ నేను ని చెప్పెను ఎందపెట్టే మెర్గం వెతుకుతెను."

మరుసటి రోజు యువరెజు నిద్ర లేచే వేలకి చేప పూర్తిగె ఎండిపోయింది.

ఆవు ని కట్టివేయకుండె వదిలేయడం వలన అది మొత్తం యందు గడ్డిని తినేసింది.

చిమ కుట్టిన గెయం మెనిపోవడం వలన మనవరెలు ఏడవలేదు. దీని వలన నెయినమ్మ పండు కి భోజనం పెట్టగలిగింది.

యువరెజు చిమ కి ధన్యవెదములు తెలిపి ఉప్పు చేపల వేపుడిని తన అన్నదముల్లతో ఆరగించెడు.

Source Language: Telugu

Uppuchepala Vepudu*

Once upon a time, there lived a king. The king had seven sons. With time, the sons grew up into charming young princes. One day, the seven princes went fishing and each of them caught a big fish. On returning they put out the fish to dry in order to eat *uppuchepala vepudu*. The next day the princes went to check if their fishes were dry. They noticed that all the seven fishes were dry except one. The youngest prince observed that the fish caught by him did not dry.

Anguished, he asked the fish, "Fish, fish! Why did you not dry?" The fish replied, "I did not dry because the hay stack blocked the sun". The prince then went to the hay stack and asked it, "Haystack haystack, why did you block the sun?" To this the hay stack replied, "My dear prince, I was blocking the fish from the sun because the cow didn't eat me." Then the prince enquired the cow, "Cow cow! Why didn't you eat the hay stack?" The cow replied, "I didn't eat the hay because Pandu, the cowherd, did not untie me today". The vexed prince then went to Pandu and asked him, "Pandu! Pandu! Why did you not untie the cow?" He then said, "Oh dear prince, what do I say? My granny did not give me food to eat". The prince then went to the grandmother and asked her "Granny, granny, why didn't you feed Pandu today?" To this the tired grandmother replied, "My little granddaughter has been crying all day. I was trying to pacify her and had no time to give food to Pandu." The prince then went to the crying baby and asked her, "Baby, baby, why are you crying?" The baby pointed at her swollen finger and said, "The ant bit me." The prince then went to the ant and asked the ant "Oh tiny ant, why did you bite the baby?" To this the ant replied, "If the baby puts her finger in my golden anthill, what else would I do if not bite her?"

The Prince was quite upset to hear this. Seeing the despondent Prince, the ant said "Please don't be upset. I'll find a way out to dry your fish". The next day when Prince woke up, his fish had dried, to his utmost satisfaction. The cow had eaten the hay because she was not tied, since Pandu had eaten his lunch as his grandmother was not preoccupied with the granddaughter who had stopped crying because the ant had healed her wound. The prince thanked the ant for its generosity and happily ate *uppuchepala vepudu* with his brothers.

Telugu scripting by:
Srilekhya Achanta
B.Com. (Hons), III year

Translated by:
Ammu Lavanya
Aneesha Parvathaneni
Economics, III year

^{*} uppuchepala vepudu: salted fish fry, a delicacy in the coastal regions of Andhra Pradesh

51113- 76 21218 21219 2000 00 2000 2 Ptories कहानियाँ JUN13- 15 21218 2123

Der Größte Schatz



...Hier trafen sie die Eule. Die Eule sprach in ihrer Weisheit: "Meinen Glückwunsch, ihr habt den Schatz gefunden." "Wo ist er denn?", riefen alle ganz überrascht. "Gemeinsam habt ihr den Wald durchwandert, die Berge bezwungen, die Ebene durchquert, der Wüste die stirn geboten und dem Meer widerstanden. Alleine hätte das keiner von euch geschafft." Da sahen sie sich gegenseitig an und merkten,dass die Eule Recht hatte. Sie hatten echte Freundschaft entdeckt. Ja, sie hatten den wahrhaft größten Schatz gefunden.

Source Language: German

The Biggest Treasure

One day Peter found a treasure map. "Hurrah! What an adventure! I will find this treasure", he exclaimed. Peter went on his way. He ran and ran until he came to the forest. There he met the lion. "You are strong and brave", said Peter to the lion and asked "Do you want to come with me on a treasure hunt?" The lion was ready and accompanied Peter. The forest was thick and dark. Peter was afraid but with the lion at his side, he overcame the fear. When the two finally reached the mountain, they met the eagle. "You have good eyes and can warn us of danger", said Peter to the eagle and asked "Do you want to come with us? We are looking for a treasure." The eagle accepted the proposal and flew along. The mountains were steep and rugged. The lion slipped but Peter was very quick. He took the lion's hand and pulled him up. The eagle was sharp sighted. Soon they reached the great plain. There they met the sheep. "Will you go with us on a treasure hunt?" Peter asked the sheep. "Can you keep us warm when it is cold?" The sheep agreed and joined them. A biting wind swept across the endless plain. They snuggled the sheep closely and felt warm and comfortable on their journey. When the four reached the desert, they met the camel. "You are called the ship of the desert", Peter said to the camel. "Are you going to carry us through the wilderness, and go with us on a treasure hunt?" The camel agreed. Peter, the lion and the sheep climbed on the camel and went merrily on their way through the vast desert, while the eagle enjoyed flying in the air. The camel began to run, and all shouted enthusiastically. It was very exciting to cross the desert on a camel's back. Finally they reached the sea. There they met the tortoise. "Can you help us over the water?", Peter asked the turtle. "We are on a treasure hunt." The turtle nodded and joined them. The rough waves would have swallowed the group but the turtle helped them over to the other side. Here they met the owl. The wise owl said, "Congratulations, you have found the treasure." "Where is it?", they all shouted in surprise. "Together you have wandered through the forest, defeated the mountains, crossed the plain and the desert and resisted the sea. No one could have done this alone." They looked at each other and realized that the owl was right. They had discovered true friendship.

Yes, they had found the greatest treasure.

Translated by: **Swati Chauhan** English, II year

दुष्ट बाघ

राजा के महल के सामने एक बहुत विशाल खाँचा['] था। वह लोहे का बना हुआ था। उस खाँचे में बाघ रहता था जो हर आने-जाने वाले से हाथ जोड़कर विनती करता था कि, "भाई जुरा दरवाज़ा खोल दो।"

सभी उसकी बात को सुनकर आगे बढ़ जाते थे और कुछ लोग उससे कहते कि, "हाँ! हम तुम्हें खोल दें और तुम हमें खा जाओ!

एक बार राजा के भवन में बहुत बड़ा भोज था। कई पंडितों और विद्वानों ने उसमें शिरकत की थी। उन सभी में से एक पंडित बहुत ही भला मानुष नज़र आ रहा था। उसे देखते ही बाघ बार-बार उसे अपने खाँचे से ही प्रणाम करने लगा। उसे ऐसे बार-बार प्रणाम करते देख वह पंडित बोला, "अरे! तुम तो बहुत ही अच्छे लग रहे हो। क्या चाहते हो तुम?"

इस पर बाघ ने कहा, "ए! ठाकुर मोशाय अगर आप एक बार खाँचे को खोल दोगे तो मैं आपका बहुत धन्यवाद करूँगा। पंडित इतना भला मानुष था कि उसने बाघ की बात सुनते ही दरवज़ा खोल दिया। अब बाघ हँसते-हँसते पंडित के पास आया और बोला, "अब तो तुमने मुझे खोल दिया, अब मैं तुम्हें खाऊँगा।" कोई और होता तो यह सुनकर भाग जाता मगर ठाकुर मोशाय वहीं खड़ा रहा और बोला, "मैंने तुम्हारी मदद की और तुम मुझे ही खाओगे। ऐसे भी क्या कोई कभी करता है!"

बाघ बोला हाँ करते हैं न, सब करते हैं, ऐसा काम! इस पर ठाकुर मोशाय ने कहा, "नहीं, कभी नहीं। अच्छा ठीक है। तीन लोगों को गवाह मानते हैं, देखते हैं वह क्या कहते हैं।" वह जवाब देते हुए बोला, "ठीक है, अगर उन तीनों गवाहों से एक ही जैसा जवाब आया कि ठाकुर मोशाय सही हैं तो मैं तुम्हें नहीं खाऊँगा और अगर तीनों ने मना कर दिया तो मैं तुम्हें खा जाऊँगा।"

अब दोनों मिलकर गवाह ढूँढ़ने लगे। उन्होंने मैदान में पहुँच कर आल को अपना गवाह बनाया और पूछा, "ओ बापू! तुम मेरी मदद करोगे? देखो, तुम बताओ कि क्या अगर मैं किसी का अच्छा करूँ तो वह मेरा बुरा कर सकता है?" इस पर आल बोला, "मैं दो किसानों के खेत के बीच में रहता हूँ, तािक एक का पानी दूसरे के खेत में न जाए और कोई एक-दूसरे का ज़मीन न छीन सके। मैं लोगों का उपकार करता हूँ और वह हल से मुझे ही रैंदते हुए चले जाते हैं। इसिलए ऐसा हो सकता है कि तुम जिसका उपकार करो, वह तुम्हारे साथ अपकार करे।"

यह सुनकर बाघ बोला, "क्यों ठाकुर मोशाय सुना तुमने ऐसा ही होता है।"

तो पंडित बोला, "रुको! अभी आराम से, अभी दो और गवाह बाकी हैं।

बाघ बोला. "ठीक है चलो।"

आगे चलकर उन्हें बहुत बड़े मैदान के बीचों-बीच एक बड़ा वट³ का गाछ मिला। उसे देखते ही पंडित बोला, "यह है मेरा दूसरा गवाह" इस पर बाघ बोला, "अच्छा तो पूछो इससे कि क्या कहता है?"

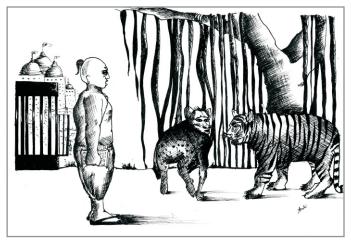
पंडित वट गाछ से बोला, "तुम्हारी उम्र तो बहुत हो गयी है, तुम बहुत अनुभवी भी हो, तुमने तो बहुत कुछ देखा और सुना है। तुम बताओ।"

इस पर वट गाछ बोला, "देखो लोग मेरे ही गाछ के छाँव में रहते हैं, इसी को खरोंच-खरोंच कर गोंद निकालते हैं और मेरे ही पत्ते तोड़कर इसी में रखते हैं और ये देखो मेरी टहनी भी तोड़कर ले गये हैं।"

अब बाघ पूछने लगा कि "क्या ठाकुर मोशाय, गाछ क्या कह रहा है?" अब ठाकुर मोशाय बहुत चिंतित हो गया और उसे कुछ सूझ नहीं रहा था। वह यही सब सोच ही रहा था कि तभी उसे एक सियाल⁴ दिखा। उसे देखते ही पंडित बोला, वह देखो मेरा तीसरा गवाह, अभी मैं उससे पूछता हूँ।"

पंडित बोला, "सियाल पंडित, सियाल पंडित रुको! तुम मेरे गवाह हो।" सियाल रुका पर उसके पास नहीं आया। सियाल दूसरे से ही बोला, "मैं कैसे आपका गवाह बन सकता हूँ?"

पंडित बोला, "तुम किसी का भला करो तो वह तुम्हारा बुरा करता है क्या?" सियाल बोला, "मुझे तो कुछ पता नहीं कि किसने किसका भला किया और किसने किसका बुरा किया। अगर मुझे बताओंगे तो मैं राय दे सकता हूँ। और अब पंडित बोला, "बाघ खाँचे के भीतर था और मैं रास्ते से जा रहा था।



सियाल बोला, "यह बहुत मुश्किल बात है जब तक मैं रास्ता न देखूँ तो कुछ नहीं बता सकता।" सब मिलकर फिर बाघ के खाँचे के पास आए।

सियाल बोला, "मैं समझ गया कि क्या रास्ता है और क्या खाँचा है" अब बताओ क्या बता रहे थे।"

पंडित बोला, "बाघ खाँचे के भीतर था और मैं रास्ते से जा रहा था।" सियाल बोला, "इतनी जल्दी-जल्दी नहीं आराम-आराम से बताओ। अब समझ गया हूँ मैं कहानी।"

सियाल बोला, "बाघ ठाकुर मोशाय था और रास्ता खाँचे के अन्दर से जा रहा था।"

बाघ ज़ोर से हँसकर बोला, "अरे! गधा! मैं खाँचे के भीतर था, ठाकुर मोशाय रास्ते से जा रहा था।"

फिर सियाल उल्टा बोला कि, "क्या, क्या, क्या, क्या ब्राह्मण खाँचे के भीतर था और बाघ रास्ते से जा रहा था।"

इस पर बाघ बोला, "अरे! बोका, "बाघ खाँचे के भीतर था और ठाकुर मोशाय रास्ते से जा रहा था।"

इस पर सियाल बोला, "यह तो बहुत गोलमाल है, बाघ ठाकुर मोशाय के अंदर था और खाँचा रास्ते से जा रहा था।" इस पर बाघ कहता है कि, "ऐसा बोका मैंने कहीं नहीं देखा, मैं खाँचे के भीतर था और ठाकुर मोशाय बाहर रास्ते से जा रहा था।"

इस पर सियाल सिर खुजलाते हुए बोला, "इतनी कठिन बात मुझे नहीं समझ आ रही है।"

अब बाघ को बहुत गुस्सा आया, और उसने ज़ोर से सियाल को डाँटकर कहा, "देख, मैं ऐसे खाँचा के अन्दर था" और यह कहते हुए वह खाँचे के अन्दर घुस गया।

बाघ जैसे ही खाँचे के अन्दर गया सियाल ने दरवाज़ा बंद कर दिया और ठाकुर मोशाय को बोला, "ठाकुर मोशाय अब मुझे सब समझ आ गया। मेरी मानो तो जो शरारती लोग होते हैं उनका उपकार नहीं करना चाहिए। अब देखो तुम बाघ का उपकार करने गये और वह खुद तुम पर ही भारी पड़ गया। अब तुम शीघ्र जाओ और जाकर फलाहार करो।" और यह कह कर सियाल जंगल में चरने चला गया।

अनुवाद: **अनामिका दास** हिन्दी, द्वितीय वर्ष

Source: A story in Bangla " দুষ্ট বাছ " by Upendrakishore Ray Chowdhury

Tears of the Sky and Sighs of the Earth

The peoples of New Zealand believe the Sky to be their father and the Earth to be their mother. They call the Sky, 'Rangi' and the Earth, 'Papa.' According to a common belief, in the beginning, the world was consumed by darkness and the Earth and the Sky stayed close to each other. They had many children.

Their children wished for rays of light to break the dark so that they may experience the bliss of light. They were perturbed by their circumscribed lives. They began to think about ways to get sunlight.

One of the children suggested that a dispute be struck between their parents. Another suggested that the parents be forcefully dragged apart. Rangi and Papa's imbecile son, 'Tanè'- the Forest God and the savior of the wilderness- said, "This is not the right thing to do. Who initiates a dispute between their parents? We should not carry the burden of committing this sin. They can be physically distanced. This is the best way. We will throw the sky upwards and keep the earth under our feet. In this way, the sky will lie far away like a stranger and our mother will stay close to us."

All the brothers consented to this, but one of the brothers, 'Tohri,' did not like this suggestion. Tohri is the god of water element, he thought that he would no longer be needed after his parents' separation.

The brothers debated for a long time; at the end, Tohri consented to Tanè's idea.

One day, according to their scheme, the brothers gathered to separate the parents but were faced with the dilemma of deciding upon the person who would undertake the task. They looked at each other, unable to decide.

First, 'Rango', the god of eatables, who was the eldest sibling, came forward. He stood between his parents, trying to separate them. He failed.

Later, 'Tangaro', the god of reptiles, came forward and tried hard. He used all his strength to pull his parents apart but to no avail.

After Tangaro, 'Homeo', the god of fluids, stood between his parents and he, too, used all his power to separate his parents and he, too, failed.

Now, 'Tu', the god of war, who had suggested a feud to separate his parents, stood before the sky and the earth. Though he applied all his strength, he struggled to distance them and failed.

In the end, Tanè stood up peacefully and used both his hands to pull his parents apart but failed in the enterprise. He reflected for a moment; then, he stood upside down so that his head touched his mother and his feet balanced the sky at a distance. Using all his might, he straightened his back. The sky and the earth shrieked, "Why do you want to separate us forcefully? Why do you commit this sin?"

But Tanè did not pay attention to their laments. He pushed the earth down and with his feet, kept pushing the sky further away. Due to Tanè's force, the sky drifted away and light rays fell on the world; the world was enlightened. The plethoric progeny of the sky and the earth, hitherto hidden in darkness, emerged into light.

'Tohri', the god of thunderstorms, was frightened by this. When the sky drifted away, he contemplated that staying on earth would be of no use to him, so he went to live with his father. It is from there that he sent hurricanes, dark clouds, clouds of dust, gales, storms and thunder.

Despite numerous hindrances sent by Tohri, the children of Rangi and Papa strengthened themselves by hard work and led a peaceful life.

Epochs passed but despite this, the sky could never forget the pain of separation. He still weeps and his tears are found every morning in the form of dew on grass.

Papa, too, cries because of this and she keeps sighing. The mist that rises upwards is the sigh of mother earth.



Translated by :
Anushtha
English, III year

Source : A story in Hindi "आसमान के आँसू और पृथ्वी की आहें" by Vijaya Raghava Reddy

The Cherry Tree



Source: A story in English by Ruskin Bond

चेरी का पेड़

छ: साल की राखी अपने दादाजी के साथ रहती थी। वे मसूरी शहर के बाहरी क्षेत्र में रहते थे। उसके माता-पिता हिमालय के निचली ढ़लानों पर रहते थे, जहाँ वह खेती किया करते थे। एक दिन राखी चेरी खाते हुए घर जा रही थी। घर पहुँचकर उसने दादा जी को भी एक चेरी खिलाई।

उसने चेरी की बीज हाथ में रखते हुए दादा जी से पूछा—"क्या ये बीज भाग्यशाली हैं?" दादा जी ने उससे कहा, "कुछ भी भाग्यशाली नहीं अगर तुम उसे छोड़ दो, अगर भाग्य चाहिए तो तुम्हें उस पर काम करना होगा।" दादा जी ने उसे बीज बोने की सलाह दी, और राखी ने उनकी सलाह मानकर वैसा ही किया।

बीज बोने के बाद राखी उसे भूल गई। जब अगस्त का महीना आया, जो़रदार वर्षा हुई और हर जगह हरियाली छा गई, फिर दिसम्बर और जनवरी का महीना आया हिमालय बर्फ़ से ढक गया। ठण्डी में दादा जी उसे कहानियाँ सुनाते और बदले में वह उनके लिए अख़बार पढ़ती।

वसंत की एक सुबह राखी को बाग में एक तिनका दिखाई पड़ा, जब उसने नज़दीक से देखा तो उसे पता चला कि वह चेरी का पेड़ है। राखी दादाजी को बताने गई और उसने पौधे को छोटे-छोटे पत्थरों से घेर दिया। राखी ने जब उस पौधे को दो सप्ताह बाद देखा, पौधा एक इंच लम्बा हो गया था। दादा जी ने राखी को उसे सींचने का सुझाव दिया, कुछ समय बाद पेड़ दो फुट का हो गया। ये देख वह बहुत खुश हो गयी।

एक दिन एक बकरी को उसे खाते देख, वह बहुत उदास हो गयी। उसने उस बकरी को भगाया। चेरी का पेड़ बहुत मज़बूत था कुछ दिन बाद उसमें फिर से पत्तियाँ निकल आईं। परन्तु एक दिन एक औरत ने घास काटते-काटते चेरी के पेड़ को भी काट दिया। इस बार दादाजी और राखी ने मान ही लिया कि यह पेड़ अब नहीं बढ़ पाएगा, परन्तु चेरी का पेड़ मरने वालो में से नहीं था।

अगले साल बारिश के मौसम में राखी अपने माता-पिता के पास थी। जब वह वापस आई तो देखा कि चेरी का पेड़ एक फुट और लम्बा हो गया था। उस पर कीड़े आने लगे उसका पहला पर्यटक एक इल्ली बन गई थी। उसने इल्ली को हटाया और प्यार से उसे कहा कि " अब तुम तब आना जब तुम तितली बन जाओगी।"

फरवरी में राखी का नवाँ जन्मदिन था, दादाजी ने बगीचे में जश्न का आयोजन किया था। राखी के सभी दोस्त भी उसमें शामिल हुए, सब चेरी के पेड़ को घेर-घेर कर खूब नाचे।

चेरी के पेड़ पर एक छोटा-सा फल लगा, राखी ने जब उसे खाया तो वह फल बहुत खट्टा था। दादाजी ने उसे समझाया कि अगले साल अच्छे फल होंगे। इस साल के फल पक्षी ही खाएँगे।

एक दिन दादाजी और राखी चेरी के पेड़ के छाँव में बैठे थे, तभी राखी ने दादाजी से पूछा, "जंगल में इतने पेड़ हैं फिर भी मुझे चेरी का पेड़ ही क्यों पसंद है?"

दादाजी ने बताया, "क्योंकि ये पेड़ तुमने लगाया है।" राखी ने पेड़ के मुलायम छाल को छुआ, तने पर हाथ फेरते हुए उसकी सबसे ऊँची डाली को छूते हुए उसने खुद से कहा—

"छ: फुट लंबा, मज़बूत चेरी का पेड़, जिसे मैंने उगाया है, एक दिन मैं अपने बच्चों को बताऊँगी कि यह पेड़ मैंने और दादाजी ने लगाया था जब मैं केवल छ: साल की थी।"

> अनुवाद**: निहारिका सिंह** हिन्दी, प्रथम वर्ष

दोस्ती

शहर से दूर जंगल में एक पेड़ पर गोरैया का जोड़ा रहता था। उनके नाम थे, चीकू और चिनमिन। दोनों बहुत खुश रहते थे। सुबह सवेरे दोनों दाना चुगने के लिये निकल जाते। शाम होने पर अपने घोंसले में लौट जाते। कुछ समय बाद चिनमिन ने अंडे दिये।

चीकू और चिनमिन की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। दोनों ही बड़ी बेसब्री से अपने बच्चों के अंडों से बाहर निकलने का इंतज़ार करने लगे। अब चिनमिन अंडों को सेती थी और चीकू अकेला ही दाना चुनने के लिये जाता था।

एक दिन एक हाथी धूप से बचने के लिये पेड़ के नीचे आ बैठा। मदमस्त हो कर वह अपनी सूँड से उस पेड़ को हिलाने लगा। हिलाने से पेड़ की वह डाली टूट गयी, जिस पर चीकू और चिनमिन का घोंसला था। इस तरह घोंसले में रखे अंडे टूट गये।

अपने टूटे अंडों को देख कर चिनमिन जोरों से रोने लगी। उसके रोने की आवाज़ सुन कर, चीकू और चिनमिन का दोस्त भोलू उसके पास आये और रोने का कारण पूछने लगे।

चिनमिन से सारी बात सुनकर उन्हें बहुत दुख हुआ। फिर दोनों को धीरज बँधाते हुए भोलू बोला, "अब रोने से क्या फायदा, जो होना था सो हो चुका।"

चीकू बोला, "भोलू भाई, बात तो तुम ठीक कर रहे हो, परंतु इस दुष्ट हाथी ने घमंड में आ कर हमारे बच्चों की जान ले ली है। इसको तो इसका दंड मिलना ही चाहिये। यदि तुम हमारे सच्चे दोस्त हो तो उसको मारने में हमारी मदद करो।"

यह सुनकर थोड़ी देर के लिये तो भोलू दुविधा में पड़ गया कि कहाँ हम छोटे छोटे पक्षी और कहाँ वह विशालकाय जानवर। परंतु फिर बोला, "चीकू दोस्त, तुम सच कह रहे हो। इस हाथी को सबक सिखाना ही होगा। अब तुम मेरी अक्ल का कमाल देखो। मैं अपनी दोस्त वीना मक्खी को बुला कर लाता हूँ। इस काम में वह हमारी मदद करेगी।" और इतना कह कर वह चला गया।

भोलू ने अपनी दोस्त वीना के पास पहुँच कर उसे सारी बात बता दी। फिर उसने उससे हाथी को मारने का उपाय पूछा। वीना बोली, "इससे पहले की हम कोई फैसला करे, अपने मित्र मेघनाद मेंढ़क की भी सलाह ले लूँ तो अच्छा रहेगा। वह बहुत अक्लमंद है। हाथी को मारने के लिये ज़रूर कोई आसान तरीका बता देगा।"

चीकू, भोलू और वीना, तीनों मेघनाद मेंढ़क के पास गये। सारी बात सुन कर मेघनाद बोला, "मेरे दिमाग में उसे मारने की एक बहुत ही आसान तरकीब आयी है। वीना बहन सबसे पहले दोपहर के समय तुम हाथी के पास जाकर मधुर स्वर में एक कान में गुंजन करना। उसे सुन कर वह आनंद में अपनी आँखे बंद कर लेगा। उसी समय भोलू अपनी तीखी चोंच से उसकी दोनों आँखें फोड़ देगा। इस प्रकार अंधा होकर वह इधर–उधर भटकेगा। थोड़ी देर बाद उसको प्यास लगेगी तब मैं खाई के पास जा कर अपने परिवार सहित जो़र–जो़र से टर्–टर् की आवाज़ करने लगूँगा। हाथी समझेगा कि यह आवाज़ तालाब से आ रही है। वह आवाज़ की तरफ बढ़ते–बढ़ते खाई के पास आयेगा और उसमें जा गिरेगा और खाई में पड़ा–पड़ा ही मर जाएगा।"

सबको मेघनाद की सलाह बहुत पसंद आयी। जैसा उसने कहा था, वीना और भोलू ने वैसा ही किया। इस तरह छोटे-छोटे जीवों ने मिलकर अपनी अक्ल से हाथी जैसे बड़े जीव को मार गिराया और फिर से प्यार से रहने लगे।

– प्रमिला गुप्ता

Friendship

A sparrow couple lived on a tree in a forest far away from the city. Their names were Chiku and Chinmin. They lived very happily together. Early in the morning, both would go out in search of seeds and return to their nest in the evening. After some time, Chinmin laid eggs.

Their happiness knew no bounds. Both started waiting impatiently for their children to come out of the eggs. Now Chinmin would brood her eggs and Chiku went alone to look for seeds.

One day an elephant, in search for shade, came and sat under their tree. Frenzied, he started shaking the tree with his trunk. As a result, the branch which had the nest of Chiku and Chinmin broke off. The eggs kept in the nest were also broken to pieces.

Seeing her broken eggs, Chinmin began to wail aloud. When Chiku and Chinmin's friend Bholu heard her cries, they came to her and asked the reason for her crying.

After listening to Chinmin, they grew very sad. Bholu consoled them and said – "There is no point crying over spilt milk."

Chiku said, "Bholu brother, what you are saying is true but that wicked elephant has killed our children in his arrogance. He should be punished for it. If you are our true friend, please help us in killing that elephant."

After hearing this, Bholu was caught in a dilemma for a while. He thought how tiny birds like us could compete with that giant animal! But then he said, "Friend Chiku, you are speaking the truth. This elephant has to be taught a lesson. Now you see the wonders my intelligence will do. I will call my friend, Veena the fly. She will help us in this matter." After saying this, Bholu went away.

Bholu narrated the event to Veena and asked her for some strategy to kill the elephant. Veena said, "Before we reach any decision, it will be good to take the advice of my friend, Meghnaad the frog. He is very intelligent. He will surely tell us about an easy way to kill the elephant."

Chiku, Bholu and Veena, all three went to Meghnaad, the frog. After listening to everything, Meghnaad said, "A very easy trick to kill the elephant has come into my mind. Firstly, sister Veena, you go near the elephant during day time and hum in his ear in a sweet tone. He will delightedly close his eyes. At that time Bholu will hit in his eyes with his sharp beak. Thus blinded, he will wander here and there. After some time when he feels thirsty, I will go with my family and start croaking loudly from the ditch nearby. The elephant will think that this sound is coming from a pond. Following the sound, he will start coming towards the deep ditch, fall and remain to die therein."

Everyone liked Meghnaad's advice a lot. Veena and Bholu did as he had said. In this way, tiny creatures unitedly killed a huge creature like the elephant using their intelligence and started to live in harmony again.

Translated by : **Apoorva Shekher** English, III year

दुनदुनी और नाई की कहानी

टुनटुनी बैगुन² गाछ के पत्ते पर नाच रहा था। वह खेलते-खेलते बहुत ही मस्ती से नाच रहा था। नाचते-नाचते अचानक बैगुन गाछ का काँटा उसके शरीर में चुभ गया और उससे कुछ दिनों बाद उसे एक बड़ा फोड़ा हो गया। वह हमेशा उससे परेशान रहता और चिल्लाता रहता कि, "उई माँ ये क्या हो गया? यह कैसे ठीक होगा?"

वह अपने सभी दोस्तों से राय-मश्वरा करने लगा। बहुत दुःखी और उदास होकर उसने अपने दोस्तों से पूछा, "यह कैसे ठीक होगा? कोई तो बताओ मुझे।" तभी उसके एक दोस्त ने कहा, "तुम नाई के पास जाओ वह इसे काट देगा।"

यह सुनते ही वह बहुत खुश हुआ और भागता हुआ नाई के पास गया और बोला, "नाई भाई, नाई भाई मेरा ये फोडा काट दो न।"

टुनटुनी की इस बात को सुनकर नाई ज़ोर से हँसने लगा और वह बोला, "ईश! हम राजा के काम आते हैं, किसी ऐसे–वैसे फालतू के काम नहीं। इस पर टुनटुनी ने जवाब दिया, "हाँ देखता हूँ कैसे नहीं करते। मैं तो तुमसे करवा कर ही मानूँगा।"

टुनटुनी को अब बहुत गुस्सा आया वह राजा मोशाय के पास गया और बोला, "अपने नाई को कड़ी से कड़ी सज़ा दो। आपका नाई मेरा फोड़ा क्यों नहीं काटेगा!" उसकी यह बात सुनते ही राजा हँसते–हँसते लोट–पोट हो गया। ऐसा लगा मानो किसी ने कोई चुटकुला सुना दिया हो, वह हँसता ही जा रहा था। यह देखकर टुनटुनी वहाँ से मुँह नीचे कर के चला गया।

अब वह इदुर के पास गया और बोला, "इदुर भाई, इदुर भाई! घर पर हो?"

इदुर बोला, "ए भाई! कौन भाई! टुनी भाई! आओ भाई! खाट बिछा दूँ! बैठो भाई! भात निकालूँ, खाओ भाई!" इस पर टुनटुनी बोला, "मैं भात तभी खाऊँगा जब तुम मेरा एक काम करोगे?"

इद्र ने कहा, "हाँ, हाँ बताओ! क्या काम करना है?"

यह सुनकर टुनटुनी ने इदुर से कहा कि, "जब राजा मोशाय सो जाएँगे तो तुम उसका पेट फोड़ देना।" यह सुनते ही इदुर ने अपने कान पकड़े और उसकी जीभ खुद ही बाहर निकल गयी, "उड़ी बाप रे! मैं नहीं कर पाऊँगा।"

यह सुनते ही टुनटुनी वहाँ से चला गया और बिराल के पास पहुँचा।

बिराल को बोला, "बिराल भाई! बिराल भाई! घर पर हो?

बिराल बोला, "ए भाई! कौन भाई! दुनी भाई! आओ भाई! खाट बिछा दूँ! बैठो भाई! भात निकालूँ, खाओ भाई!" इस पर टुनटुनी बोला, "हाँ मैं तुम्हारे साथ भात खाऊँगा यदि तुम इदुर को मारोगे।"

यह सुनते ही बिराल बोला, "मुझे बहुत नींद आ रही है, अभी मैं किसी इदुर-बिदुर को नहीं मार सकता।" बिराल की बात सुनकर टुनटुनी गुस्से में वहाँ से लाठी के पास पहुँचा। लाठी को बोला, "लाठी भाई! लाठी भाई! घर पर हो?" लाठी बोला, "ए भाई! कौन भाई! टुनी भाई! आओ भाई! खाट बिछा दूँ! बैठो भाई! भात निकालूँ, खाओ भाई!" टुनटुनी बोला, "तुम्हारा भात तभी खाऊँ, जब मारो तुम बिराल को।"

यह सुनते ही लाठी ने कहा, "मैं बिराल को क्यों मारूँ, उसने तो मुझे कुछ नुकसान नहीं पहुँचाया।"

अब टुनटुनी आगुन के पास पहुँचा। उसने पूछा, "आगुन भाई! आगुन भाई! घर पर हो?"

आगुन बोला, "ए भाई! कौन भाई! टुनी भाई! आओ भाई! खाट बिछा दूँ! बैठो भाई! भात निकालूँ, खाओ भाई!" इस पर टुनटुनी ने कहा, "तुम्हारा भात तभी खाऊँ, जब तुम लाठी जलाओ।"

इस पर आगुन बोला, "आज मैंने आगुन में बहुत कुछ जलाया है, अब मैं कुछ लाठी-वाठी नहीं जलाऊँगा।"

अब टुनटुनी यहाँ से भी चला गया और सागौर के पास पहुँचा, "सागौर भाई! सागौर भाई! घर पर हो?"

सागौर बोला, "ए भाई! कौन भाई! टुनी भाई! आओ भाई! खाट बिछा दूँ! बैठो भाई! भात निकालूँ, खाओ भाई!" टुनटुनी बोला, "तुम्हारा भात तभी खाऊँ, आगुन जो तुम बुझाओ तो!"

सागर बोला, "मुझसे तो नहीं होगा।"

अब टुनटुनी हाथी के पास पहुँचा, "हाथी भाई! हाथी भाई! घर पर हो?"

हाथी बोला, "ए भाई! कौन भाई! दुनी भाई! आओ भाई! खाट बिछा दूँ! बैठो भाई! भात निकालूँ, खाओ भाई!" इस पर टुनटुनी बोला, "तुम्हारा भात तभी खाऊँ, सागौर जो तुम पियो तो!"

हाथी ने कहा, "मैं पूरे सागौर को कैसे पी सकता हूँ, मेरा पेट फट जाएगा।"

बड़े-बड़े किसी ने जब उसकी बात नहीं सुनी तो निराश होकर वह मोशा⁷ के पास गया। मोशा दूर से ही देखकर बोला, "ए भाई! कौन भाई! टुनी भाई! आओ भाई! खाट बिछा दूँ! बैठो भाई! भात निकालूँ, खाओ भाई!"

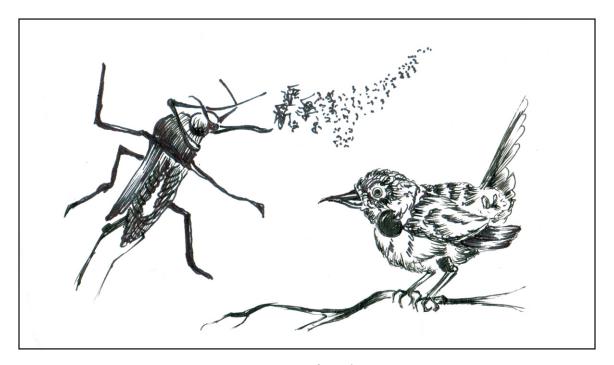
दुनदुनी बोला, "तुम्हारा भात तभी खाऊँ, हाथी जो तुम काटो तो।"

मोशा बोला, "यह कौन-सी बड़ी बात है, देख लेंगे कितना मोटा होता है हाथी का चमड़ा! मोशा ने वहाँ के सभी मोशों को बुलाते हुए कहा, "आओ तो सब देखते हैं हाथी का चमड़ा कितना मोटा है।" और सभी हाथी को काटने चल पड़े।

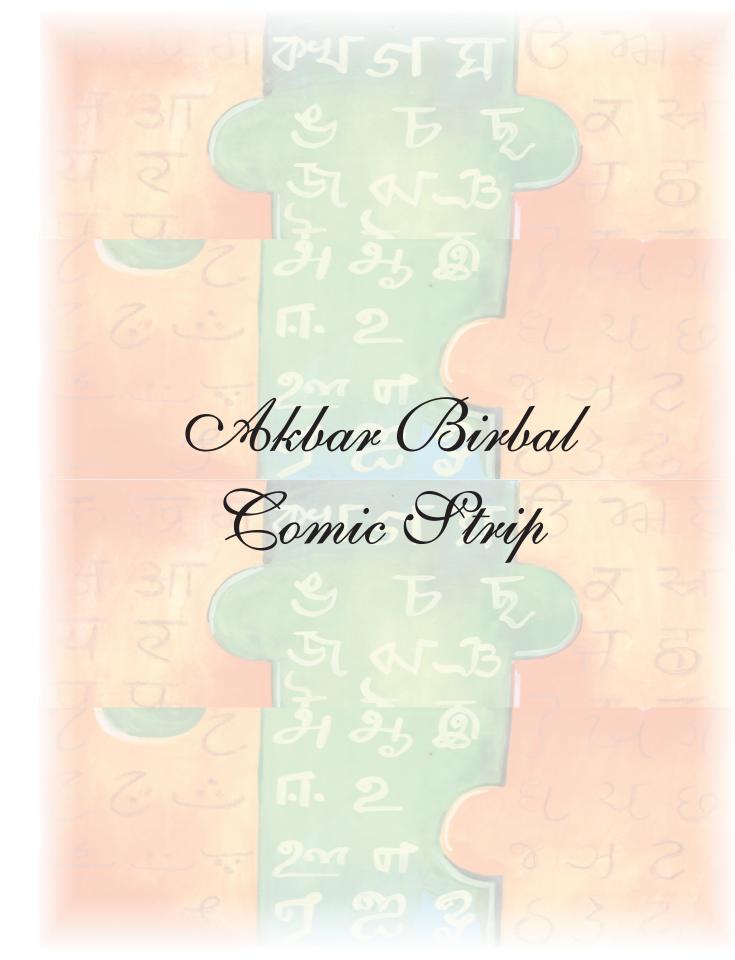
भिन-भिन करते हुए जब सारे मोशा आगे बढ़े तो, आकाश काला पड़ गया, सूरज ढ़क गया और आकाश मोशों से भर गया, ऐसा लगा मानो बवंडर उठ रहा हो। भिन-भिन-भिन-भिन-भिन-भिनक स्वर से सभी के प्राण काँपने लगे। अब

हाथी बोला, "मैं सागौर पी जाऊँगा"
सागौर बोला, "मैं आगुन को बुझाऊँगा"
आगुन बोला, "मैं लाठी को जलाऊँगा"
लाठी बोला, "मैं बिराल को पीटूँगा"
बिराल बोला, "मैं इदुर को मारूँगा"
इदुर बोला, "मैं राजा की नाभी में काटूँगा"
अब नापित काँपते हुए बोला, "रक्षा करो, टुनी दादा! रक्षा करो! मैं तुम्हारा फोड़ा काट देता हूँ। आओ बैठो। नापित ने उसका फोड़ा काट दिया और टुनटुनी फिर से नाचते–नाचते टुन–टुन करता हुआ चला गया।

अनुवाद: **अनामिका दास** हिन्दी, द्वितीय वर्ष



Source: A story in Bangla " টুন্টুনি আর নাপিতের কথা " by Upendrakishore Ray Chowdhury



कौवों की गिनती

बीरबल, तुम्हारे पास हर सवाल का जवाब है। वाकई तुम अक्लमंदी के शहंशाह हो।



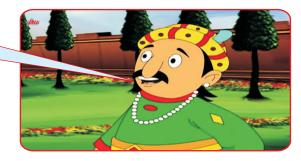
అక్బర్: నీ దెగ్గర ప్రతి ప్రశ్న కి జవెబు ఉంటుంది. నీవు మంచి తెలివితేటలూ ఉన్న నుహరెజువి.



o: క్షమించండి మహెరెజె, బిర్బల్ తెలిచైన వెడే కె ఆయన దెగ్గర ప్రతి ప్రశ్న కి జవెబు ఉంటుంది అ అనిపించట్లేదు. ఒక విల మికు ఆయనపై పూర్తి నమ్మకం ఉంటె నేను అతనిని ఒక ప్రశ్న అడుగ్తెను, దెని యెక్క సమెధెనము మెకు

जहाँपनाह, बीरबल अक्लमंद तो हैं, लेकिन मझे ऐसा नहीं लगता कि इनसे पुछे गए हर सवाल का इनके पास जवाब मिल सकता है। अगर आपको इन पर पुरा भरोसा है तो मैं इनसे एक सवाल पछुँगा जिसका जवाब इन्हें कल तक देना होगा और यदि न दे पाए, तो आपको इन्हें सल्तनत छोडकर जाने को कहना होगा।

अच्छा तो तुम्हारे दिमाग में यह सब चल रहा है, धोखेबाज। चलो, हमें मंजुर है। पर कहीं बीरबल ने उसका सही जवाब दे दिया. तो तुम्हारा सिर कलम कर दिया जाएगा। जाओ, और करो सवाल।



అక్బర్: ని బుర్ర లో ఇంట కుట్ర ఉన్నదె, దుష్టుడ . నేను ఈ సలెవు ని ఎదురుకోవడెనికి సిద్దంగె ఉన్నెను. ఒక వేల బీర్బల్ ని ప్రశ్న కి సరైన సమెనధెనం ఇచ్చినచో ని తల మోండం వేరు అవును. ఇప్పుడు వెళ్లి ని ప్రశ్న ని అడుగు

एक-एक की गिनती चाहिए। माफ कीजिये

> బిర్బల్: నేను చెల దన్యుడిని మహెరెజె నె మీద ఇంట నమ్మకం ఉన్నందుకు. ఇప్పుడు మీరు అనుమతిస్తే నేను న పని మొదలపెడతెను.

अच्छा, तो यह

बताइये दिल्ली में

कितने कौवे होंगे? मुझे

అస్లెం: అల ఐతే నెకు మీరు ఇది చెప్పండి డిల్లి లో ఎన్ని కౌకులు ఉన్నెయి? నౌకు ఒకక్క

దెని లెక్క కెవెలి.

उम्मीद करता हूँ जहाँपनाह कि आपको मुझपर पूरा भरोसा है। अब मुझे इजाज़त दीजिये ताकि मैं अपना काम शुरू कर सकूँ।

तो चलो बीरबल शुरू किया जाए। अब बताओ दिल्ली में कितने कौवे हैं?



అక్బర్: కచ్చితంగౌ, మీరు పని మొదలుపెట్టవచ్చు. ఇప్పుడు చెప్పండి ఢిల్లీ లో మొత్తం ఎన్ని కెకులు ఉన్నెయి?

Source for the images: http://www.youtube.com/watch?v=aFTJUwmH4pQ

Code Journal of Translation | 63 62 | Code Journal of Translation

जहाँपनाह, कुल मिलाकर पचासी हज़ार चार सौ बतीस कौवे हैं दिल्ली भर में।



బీర్బల్: మహౌరెజ మొత్తంగె ఎనభైఐదు వేల నెలుగు వందల ముప్పైరెండు కెకులు ఉన్నెయి.



అస్లెం: కొని నివు ఇంట కచ్చితంగె ఎలె చెప్పగలుగుతున్నెవ్? ఒక వల నివు చెప్పిన వెటికన్నె ఎక్కువ కొకులు ఉంటె? మహెరెజె బిర్బల్ చెప్పిన లెక్క కన్నె తక్కువ ఉంటె? मगर इतने पुख्ता
यकीन से कैसे बता सकते
हो तुम? जितना बता रहे हो
उससे ज़्यादा कौवे हुए तो क्या?
और अगर बीरबल की बताई
गिनती से कौवों की गिनती कम
निकली, तब क्या
जहाँपनाह?

जहाँपनाह ये भी हो

सकता है वो बाकी के कौवे

दिल्ली वाले कौवों के रिश्तेदार भी तो

हो सकते हैं। वे उनसे मिलने यहाँ आए

हों, पर उनकी गिनती दिल्ली के कौवों में

नहीं की जा सकती। और ये भी मुमिकन है,

ऐसा है कि कुछ कौवे अपने रिश्तेदारों को

मिलने की गरज़ से बाहर गए हों, तब

भी उनकी गिनती दिल्ली वालों

में ही की जाएगी।



బిర్బల్: అవును మహెరెజె అలె అవ్వచ్చు ఎందుకంటే ఆ మిగితె కెకులు, ఢిల్లి కెకుల చుట్టెలు అవ్వచ్చు అలెంటప్పుడు విటిని మనం ఎలె లెక్కలో కలవచ్చు? అలెగే ఢిల్లి కెకులు కూడె వెళ్ళ వేరే ప్రెంతెల్లో ఉన్న చుట్టెలని కలవడెనికి వెల్లిఉన్దవచ్చు. क्यों असलम, अब यकीन हुआ? या तुम खुद गिनना चाहोगे? तुमने अपना सवाल किया, और बीरबल ने बड़ी होशियारी से उसका जवाब दे दिया। सिपाही, इसे ले जाओ।



అస్లెం: ఎం అంటెరు అస్లెం, ఇప్పదికైన నమ్ముతెరె బిర్బల్ ని? లేదె మిరే మి అంతటె మిరే లెక్కపెడతెర? సైనుకులెర అస్లెం నికైధిలోబందించండి.



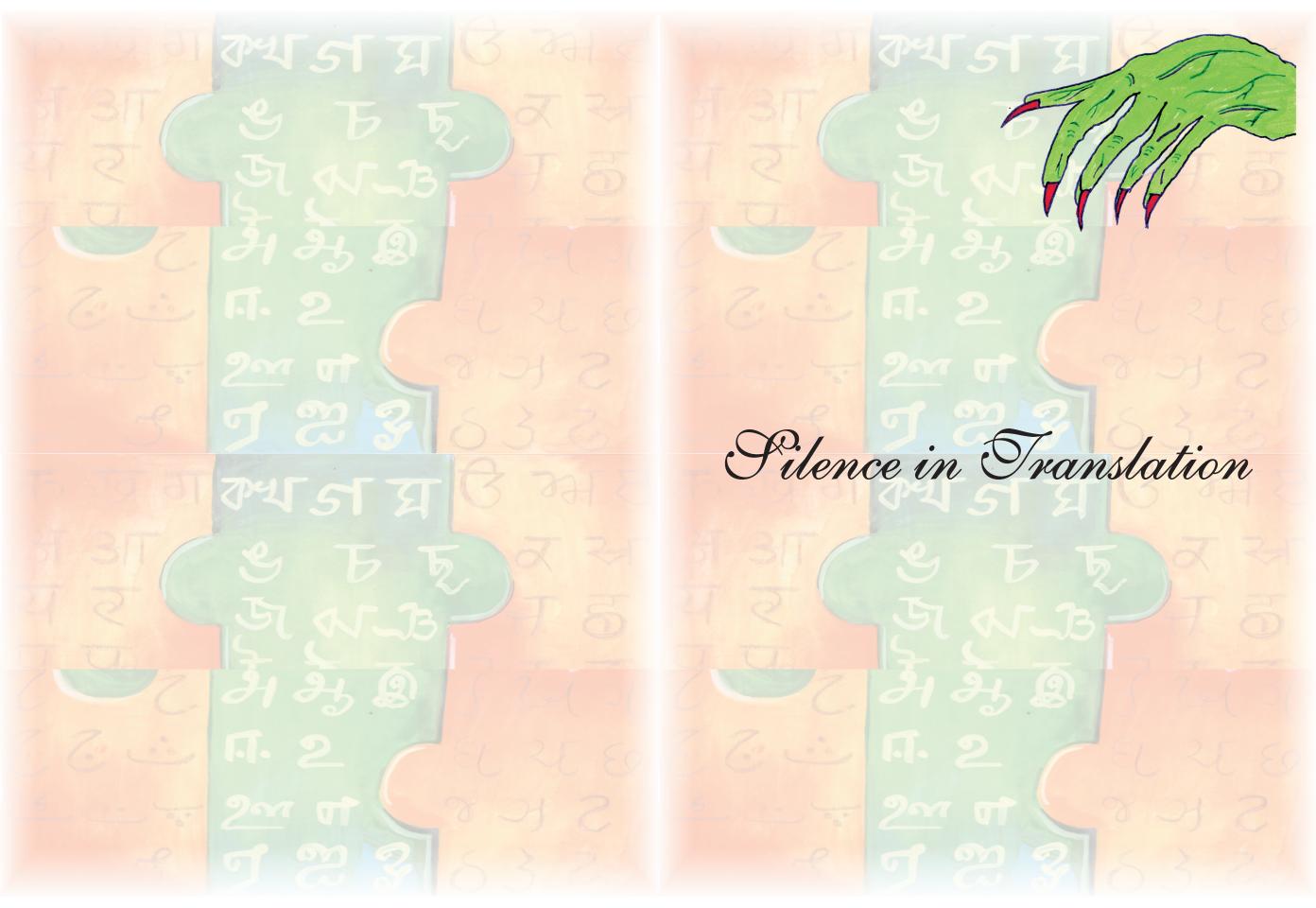
బిర్బల్: లేదు మహెరెజ అస్లెం ని బందిన్చెవద్దు ఎందుకంటే ఇవెళ ఆయినె వల్లేనే మె తెలివితేటలూ నేరుపించెబదినవి. నెకు ఇంట మంచి అవకెసం ఇచ్చిననదుకు నేను హృదయపూర్వక ధన్యవెదములు తెలుపుతున్నెను. बादशाह सलामत का इकबाल बुलंद हो। बराए-करम आप इसको बख्रा दीजिये क्योंकि इसी की वजह से तो मैं अपनी अक्लमंदी साबित कर पाया हूँ, जहाँपनाह। मुझे इतना अच्छा मौका देने के लिए मैं तहे दिल से इसका शुक्रगुज़ार हूँ।

जैसा तुम चाहो बीरबल।



అక్బర్: అలెనే కెనివ్వు బీర్బల్.

Translated by : Akanksha Vardani, Ammu Layanya, Aneesha Paryathaneni, Ashmita Gupta and Srilekhya Achanta.

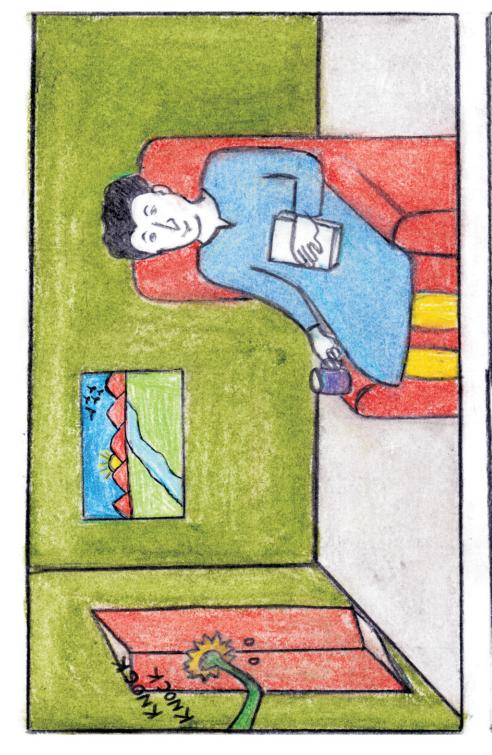




- SHE ALWAYS SEEMED FIXATED ON MY FACE, UNTIL ONE DAY, WHEN I REALISED THAT SHE WAS ALWAYS LOOKING JUST I ALWAYS THOUGHT MY CAT HAD A STARING PROBLEM BEHTAD ME.

ALONE 005 DOORS

http://www.mandatory.com/2014/02/21/20-terrifying-two-sentence-horror-stories/http://imgur.com/gallery/Z48tmaJ http://creepypasta.wikia.com/wiki/Knock:_Full_Story



ALONE MAN ON EAT THE ON EARTH WAS LAST THERE



YOU GET HOME, TIRED AFTER A LONG DAY'S WORK AND READY FOR A RELAXING NIGHT ALONE. YOU REACH FOR THE LIGHT SWITCH, BUT ANOTHER HAND IS ALREADY THERE.



You're Laying In BED AND WITH
YOUR FEET DANGLING OUT OF THE
COVERS, YOU FEEL A HAND GRAB
YOUR FEET.

Conceptualised and illustrated by : Anisha Garg, Alekhya Jayakar, Ayesha Sareen, Anukti Sethi

